मन की बात 100
MANN KI BAAT 100

मन की बात

खण्ड ३

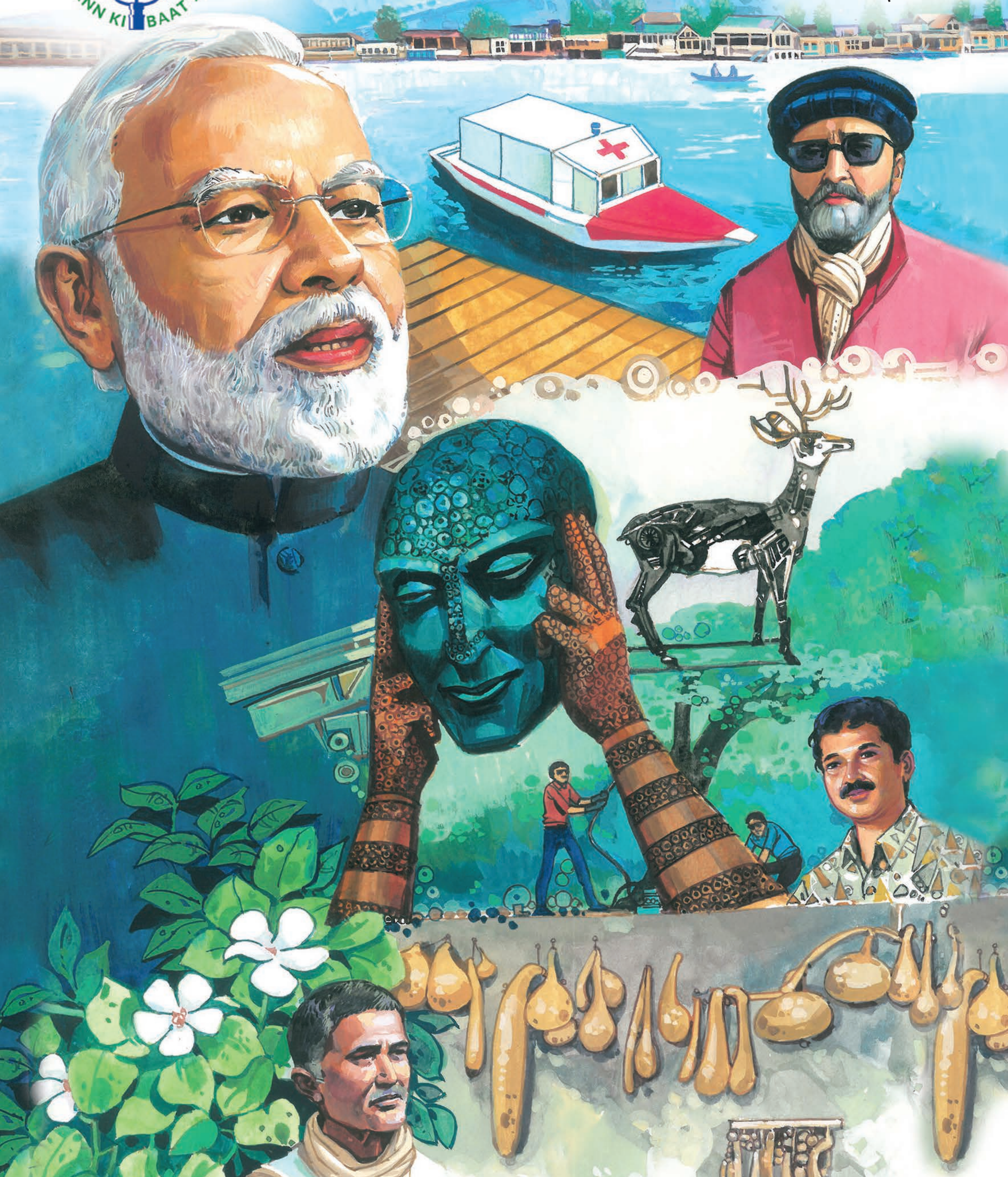

मन की बात

खण्ड ३

Script Writers
Sarda Mohan and Shashi Mukherjee

Illustrations and Cover Art
Dilip Kadam

Assistant Artist
Ravindra Mokate

Production
Amar Chitra Katha

Layout Artist
Tarangini Mukherjee

Published by
Amar Chitra Katha Pvt. Ltd

Hindi

ISBN - 978-81-19242-86-3

Amar Chitra Katha Pvt. Ltd, June 2023

© Ministry of Culture, Govt of India, June 2023
All rights reserved. This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

You can now get ACK stories as part of your classroom with **ACK Learn**,
a unique learning platform that brings these stories to your school with a range of workshops.
Find out more at **www.acklearn.com** or write to us at **acklearn@ack-media.com**.

प्रिय बच्चों,

हमारा देश प्राचीन ज्ञान और बुद्धिमानी से भरपूर है, जिसका अधिकाँश आधुनिकता की दौड़ में भूला दिया गया है। निरंतर आगे बढ़ते रहना अच्छी बात है लेकिन कभी पीछे मुड़कर भूतकाल में देखते हुए हमारे पूर्वजों द्वारा हमारे लिए छोड़ी गयी विविध विरासतों का सम्मान करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

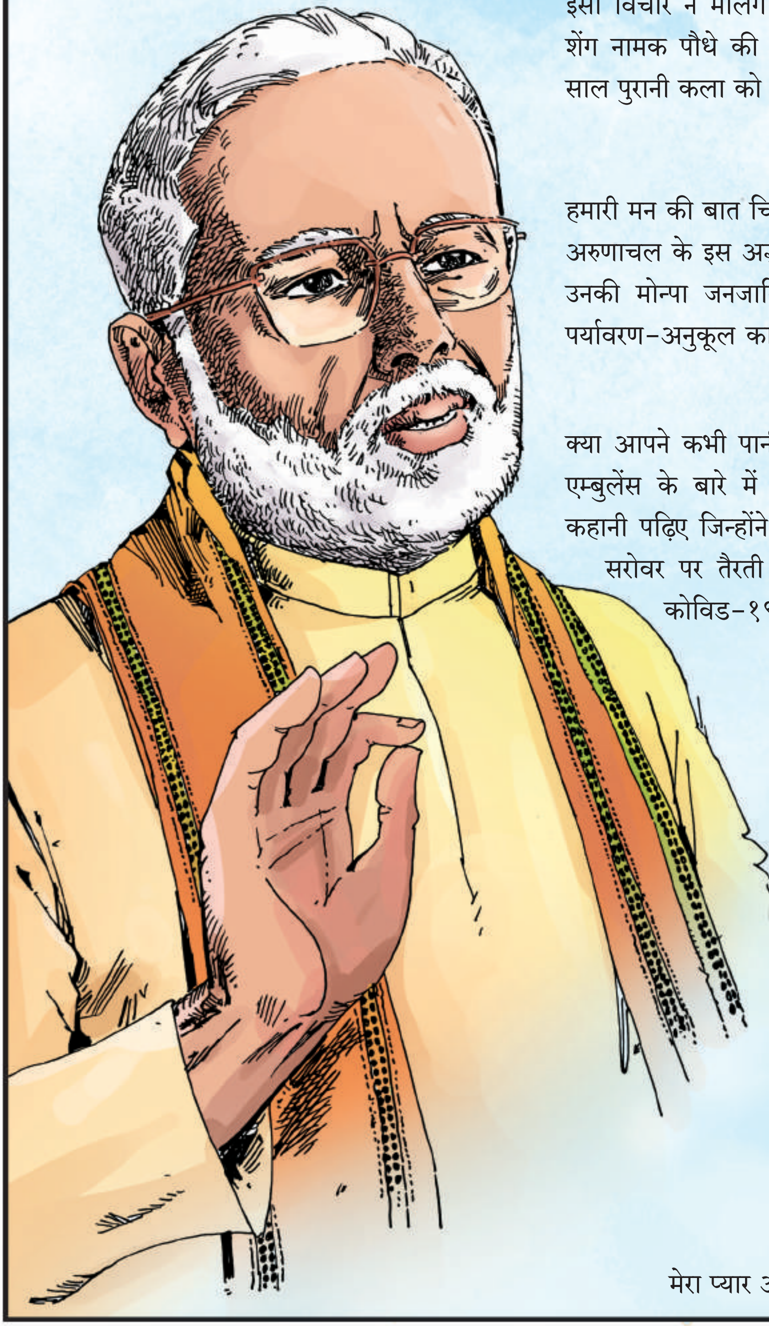

इसी विचार ने मलिंग गोम्बु को पेड़ों से नहीं, बल्कि शुगु शेंग नामक पौधे की छाल से कागज़ बनाने की १०००-साल पुरानी कला को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित किया।

हमारी मन की बात चित्रकथा श्रेणी के तीसरे खण्ड में, आप अरुणाचल के इस अद्भुत व्यक्ति के बारे में जानेंगे, जिन्होंने उनकी मोन्पा जनजाति द्वारा बनाए जाने वाले पृथ्वी के पर्यावरण-अनुकूल कागज़ को नया जीवन दिया है।

क्या आपने कभी पानी पर तैरती हुई रुग्ण वाहिनी अर्थात् एम्बुलेंस के बारे में सुना है? खैर, तारिक अहमद की कहानी पढ़िए जिन्होंने कश्मीर के श्रीनगर में खूबसूरत दल सरोवर पर तैरती रुग्ण वाहिनी चलाई। और वह भी कोविड-१९ के लॉकडाउन के दरम्यान।

आपकी आरामदेह स्थिति या सुविधा क्षेत्र से बाहर कदम रखकर कुछ करना इतना आसान नहीं है। मुश्किलों का सामना करने के लिए साहस, दृढ़ निश्चय और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन एक बार आपने यह कर दिया तो आपको लीक से हटकर सोचने में - आपका दिल जो करना चाहे उसे करने में, परम संतोष मिलता है।

मेरा प्यार और आशिर्वाद सदैव आपके साथ हैं।

अनुक्रम

१	मलिंग गोम्बु	३
२	उर्गैन फुन्त्सोग	६
३	श्रीनिवास पदकंदाला	९
४	भाग्यश्री साहू	१२
५	राम लोटन कुशवाहा	१४
६	तारिक अहमद पटलू	१७
७	संजय कच्छप	१९
८	हरिश्चंद्र सिंह	२२
९	सच्चिदानंद भारती	२४
१०	सीकरी टीस्सो	२७
११	पी. एम. मुरुगेसन	३०

मलिंग गोम्बु

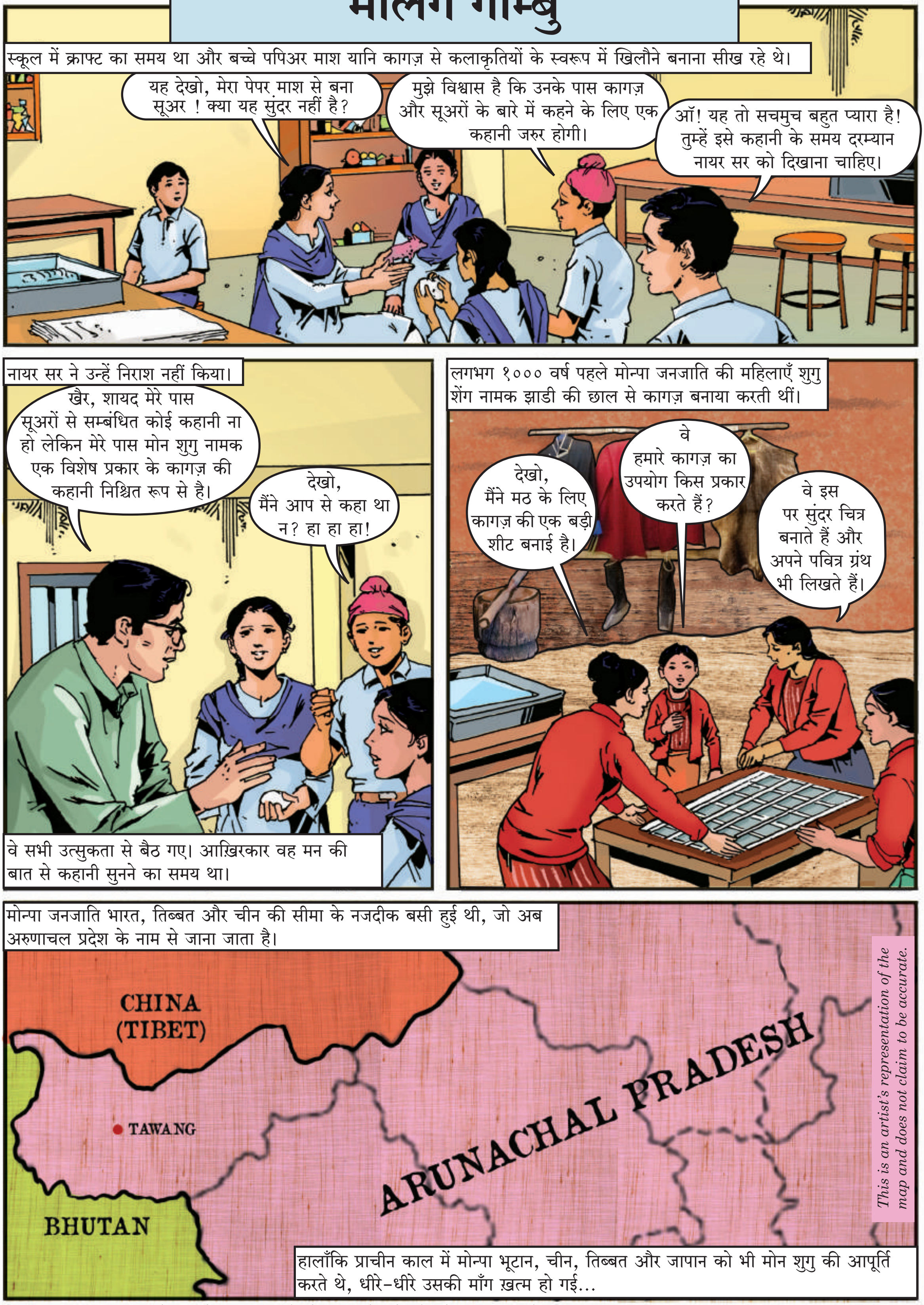

*सामान्यत: पपिअर माश के रूप में जाना जाता है जो कागज़ के गुदे और गोंद का मिश्रण है।

*लकड़े की राख से मिश्रित पानी

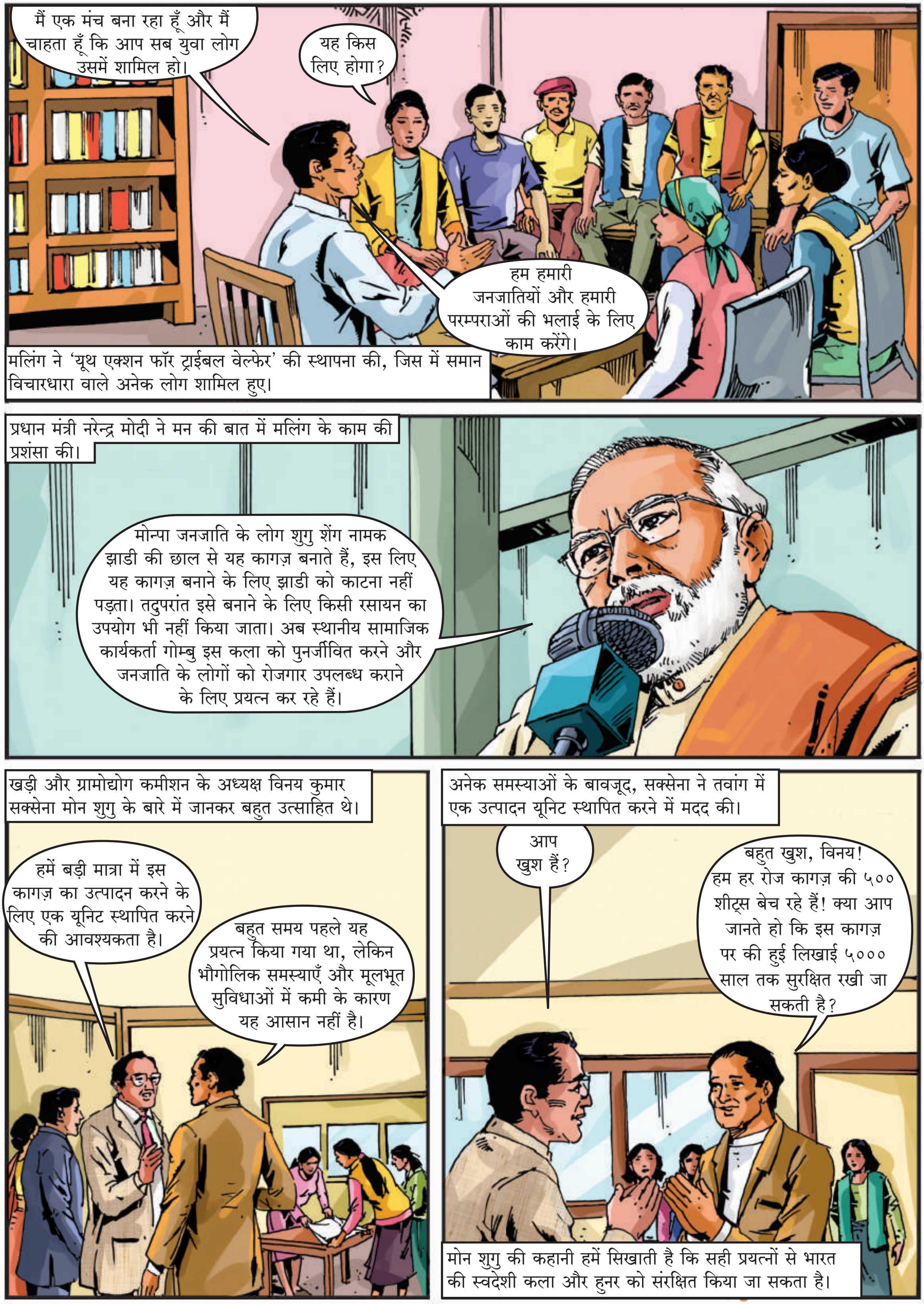

मैं एक मंच बना रहा हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप सब युवा लोग उसमें शामिल हो।
यह किस लिए होगा?
हम हमारी जनजातियों और हमारी परम्पराओं की भलाई के लिए काम करेंगे।
मलिंग ने 'यूथ एक्शन फॉर ट्राईबल वेल्फेर' की स्थापना की, जिस में समान विचारधारा वाले अनेक लोग शामिल हुए।
प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में मलिंग के काम की प्रशंसा की।
मोन्पा जनजाति के लोग शुगु शेंग नामक झाडी की छाल से यह कागज़ बनाते हैं, इस लिए यह कागज़ बनाने के लिए झाडी को काटना नहीं पड़ता। तदुपरांत इसे बनाने के लिए किसी रसायन का उपयोग भी नहीं किया जाता। अब स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता गोम्बु इस कला को पुनर्जीवित करने और जनजाति के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।
खड़ी और ग्रामोद्योग कमीशन के अध्यक्ष विनय कुमार सक्सेना मोन शुगु के बारे में जानकर बहुत उत्साहित थे।
हमें बड़ी मात्रा में इस कागज़ का उत्पादन करने के लिए एक यूनिट स्थापित करने की आवश्यकता है।
बहुत समय पहले यह प्रयत्न किया गया था, लेकिन भौगोलिक समस्याएँ और मूलभूत सुविधाओं में कमी के कारण यह आसान नहीं है।
अनेक समस्याओं के बावजूद, सक्सेना ने तवांग में एक उत्पादन यूनिट स्थापित करने में मदद की।
आप खुश हैं?
बहुत खुश, विनय! हम हर रोज कागज़ की ५०० शीट्स बेच रहे हैं! क्या आप जानते हो कि इस कागज़ पर की हुई लिखाई ५००० साल तक सुरक्षित रखी जा सकती है?
मोन शुगु की कहानी हमें सिखाती है कि सही प्रयत्नों से भारत की स्वदेशी कला और हुनर को संरक्षित किया जा सकता है।

उर्गैन फुन्त्सोग

*लदाख की भोटी भाषा में – माँ
^इन्डो-तिब्बतन बोर्डर पोलिस

**भोटी में बड़ी बहन

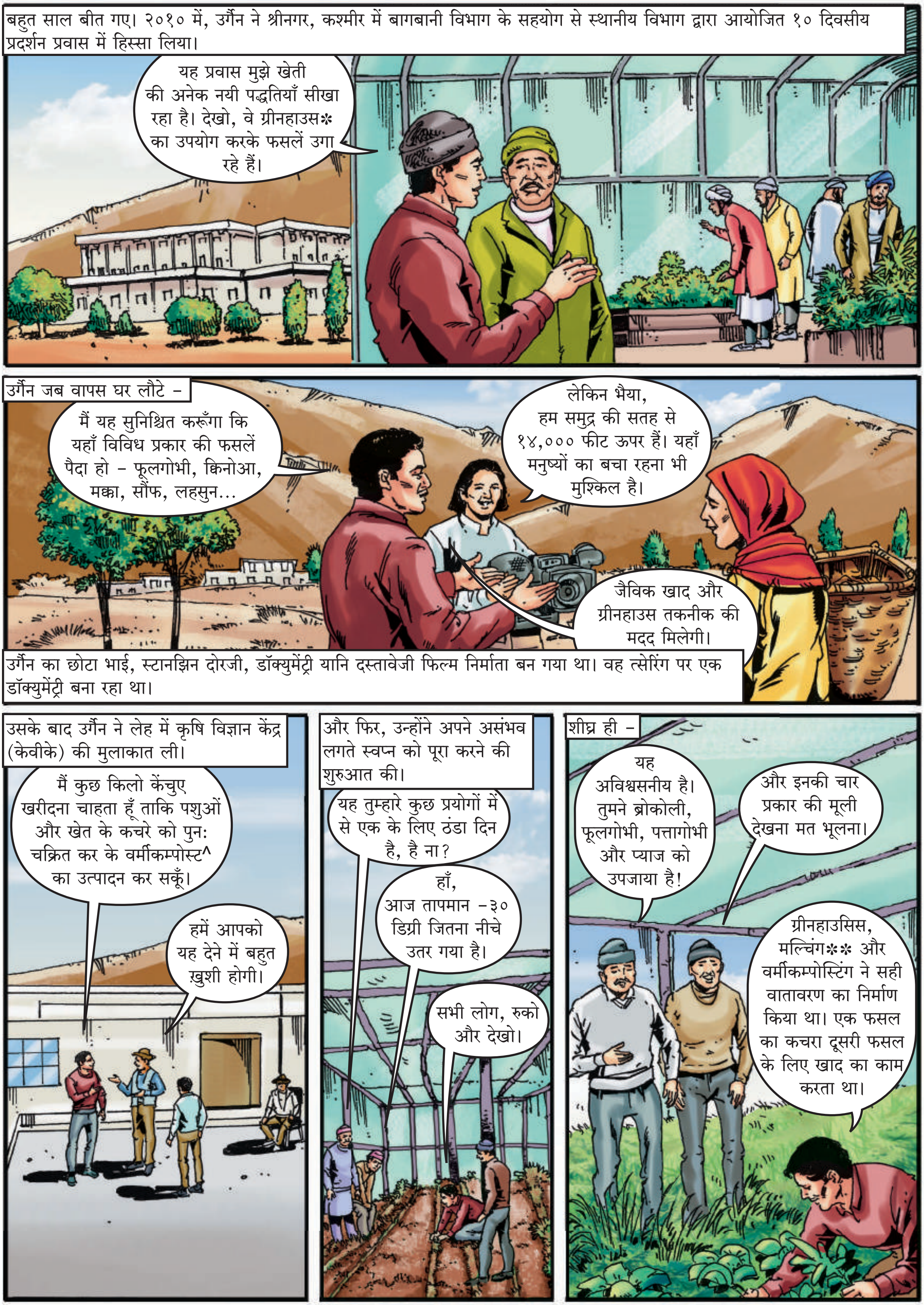

✻काँच या प्लास्टिक से बना एक ढ़ाँचा जिस के अन्दर जलवायु को नियंत्रित रखा जा सकता ह

^एक जैविक खाद

✻✻मिटटी को गरमी, ठंड या सूखेपन से बचाने के लिए उसे घास और अन्य वनस्पति की सामग्री से ढकना

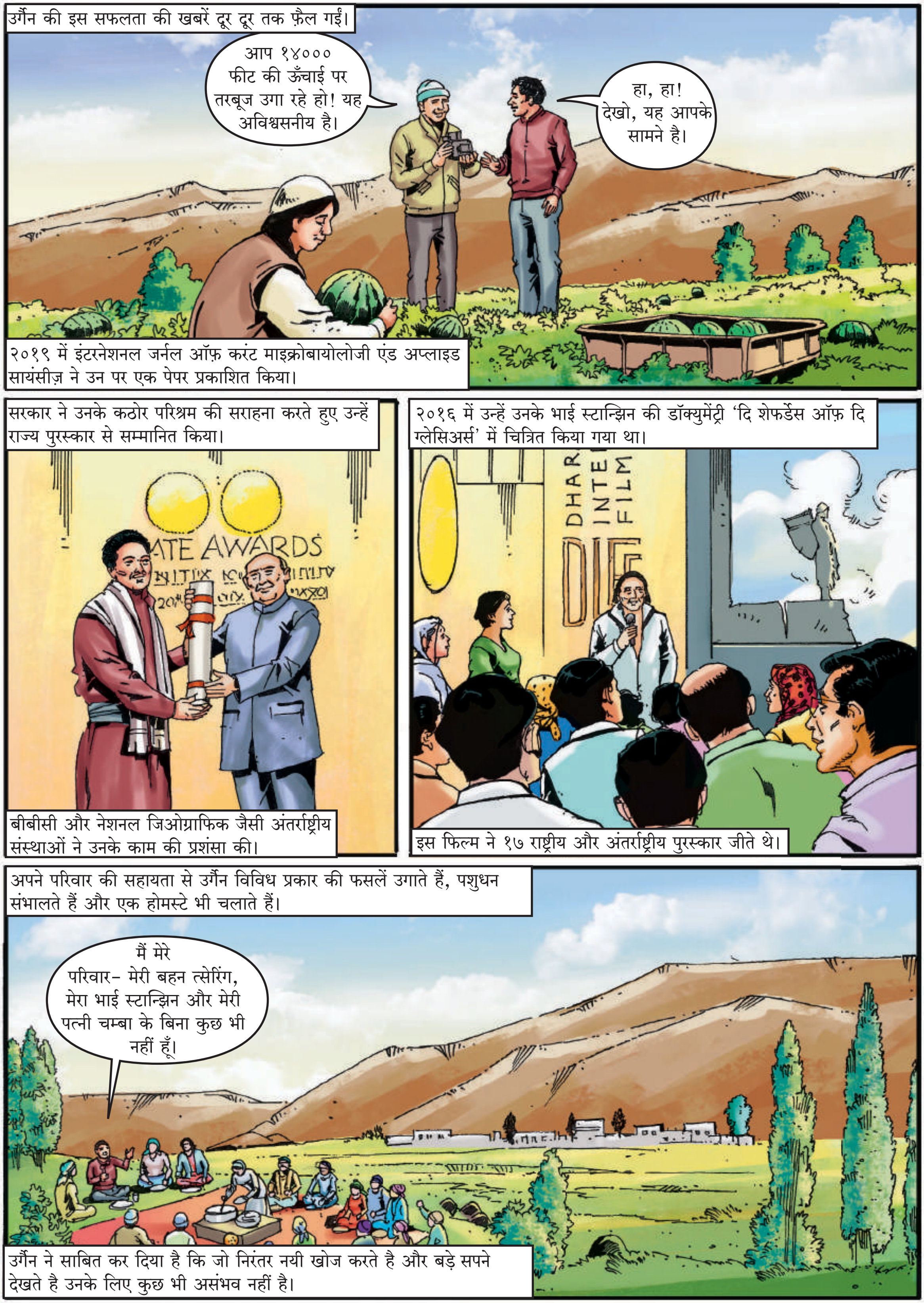
उर्गैन की इस सफलता की खबरें दूर दूर तक फ़ैल गईं।
आप १४००० फीट की ऊँचाई पर तरबूज उगा रहे हो! यह अविश्वसनीय है।
हा, हा! देखो, यह आपके सामने है।
२०१९ में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ करंट माइक्रोबायोलोजी एंड अप्लाइड सायंसीज़ ने उन पर एक पेपर प्रकाशित किया।
सरकार ने उनके कठोर परिश्रम की सराहना करते हुए उन्हें राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया।
ATE AWARDS
बीबीसी और नेशनल जिओग्राफिक जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने उनके काम की प्रशंसा की।
२०१६ में उन्हें उनके भाई स्टान्झिन की डॉक्युमेंट्री 'दि शेफर्डेस ऑफ़ दि ग्लेसिअर्स' में चित्रित किया गया था।
DHAR
INTE
FILM
इस फिल्म ने १७ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते थे।
अपने परिवार की सहायता से उर्गैन विविध प्रकार की फसलें उगाते हैं, पशुधन संभालते हैं और एक होमस्टे भी चलाते हैं।
मैं मेरे परिवार– मेरी बहन त्सेरिंग, मेरा भाई स्टान्झिन और मेरी पत्नी चम्बा के बिना कुछ भी नहीं हूँ।
उर्गैन ने साबित कर दिया है कि जो निरंतर नयी खोज करते है और बड़े सपने देखते है उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

श्रीनिवास पदकंदाला

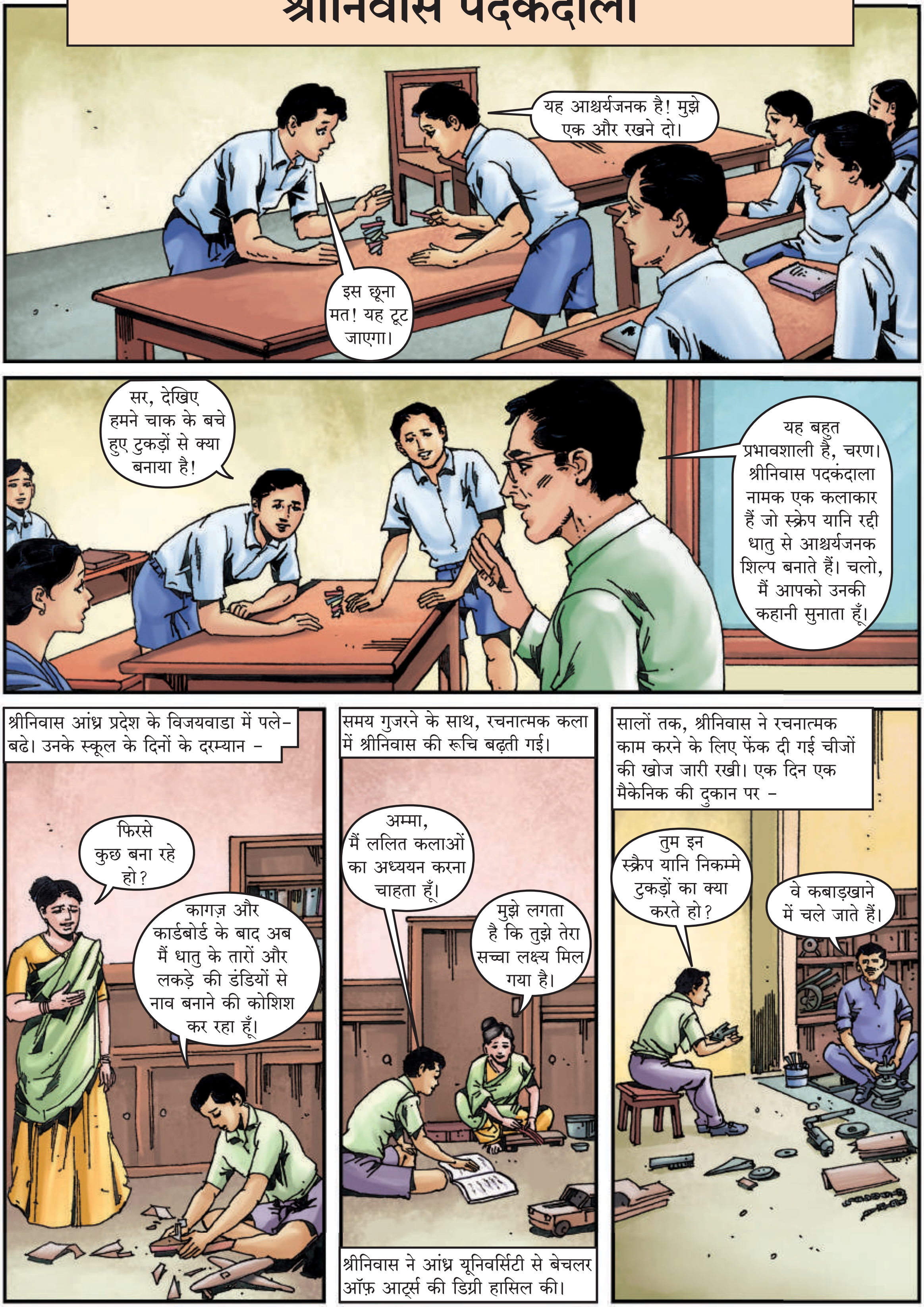
यह आश्चर्यजनक है! मुझे एक और रखने दो।
इस छूना मत! यह टूट जाएगा।
सर, देखिए हमने चाक के बचे हुए टुकड़ों से क्या बनाया है!
यह बहुत प्रभावशाली है, चरण। श्रीनिवास पदकंदाला नामक एक कलाकार हैं जो स्क्रेप यानि रद्दी धातु से आश्चर्यजनक शिल्प बनाते हैं। चलो, मैं आपको उनकी कहानी सुनाता हूँ।
श्रीनिवास आंध्र प्रदेश के विजयवाडा में पले-बढे। उनके स्कूल के दिनों के दरम्यान –
फिरसे कुछ बना रहे हो?
कागज़ और कार्डबोर्ड के बाद अब मैं धातु के तारों और लकड़े की डंडियों से नाव बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।
समय गुजरने के साथ, रचनात्मक कला में श्रीनिवास की रूचि बढ़ती गई।
अम्मा, मैं ललित कलाओं का अध्ययन करना चाहता हूँ।
मुझे लगता है कि तुझे तेरा सच्चा लक्ष्य मिल गया है।
श्रीनिवास ने आंध्र यूनिवर्सिटी से बेचलर ऑफ़ आर्ट्स की डिग्री हासिल की।
सालों तक, श्रीनिवास ने रचनात्मक काम करने के लिए फेंक दी गई चीजों की खोज जारी रखी। एक दिन एक मैकेनिक की दुकान पर –
तुम इन स्क्रैप यानि निकम्मे टुकड़ों का क्या करते हो?
वे कबाड़खाने में चले जाते हैं।

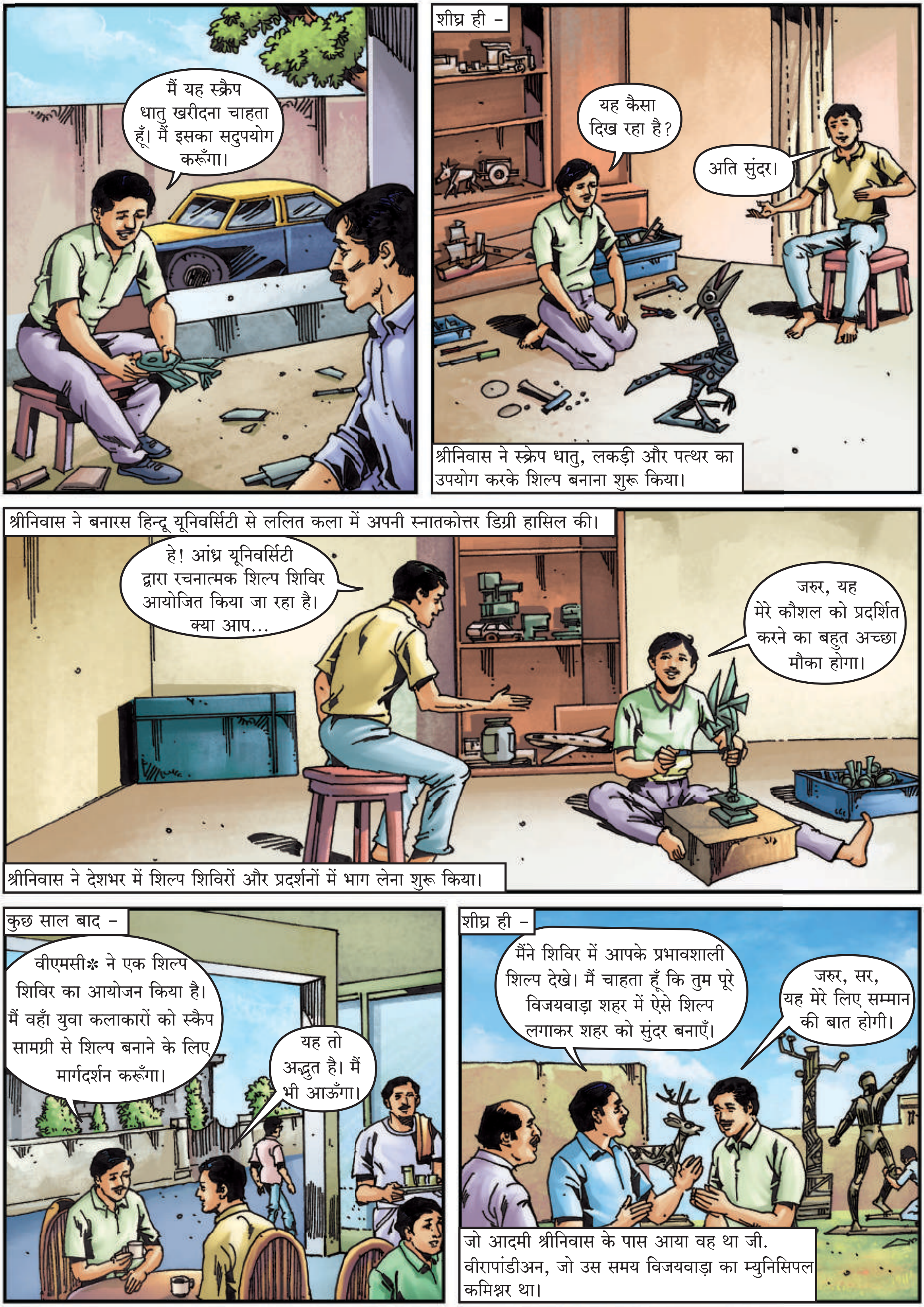

*विजयवाडा म्युनिसिपल कोर्पोरेशन

*आंध्र प्रदेश में एक अन्य शहर

भाग्यश्री साहू

*प्राकृतिक रंगों से कपडे पर स्क्रोल पेंटिंग की जाती है

**पट्टचित्र कलाकारों का एक गाँव

^उड़ीसा के पूरी जिल्हे में मास्टर ऑफ़ टेक्नोलॉजी

कुछ महीनों बाद –
तुमने सचमुच उन्हें बेचने के बारे में सोचना चाहिए! वे कितने सुंदर हैं।
क्या तुम मेरे लिए कैनवास पर एक बना सकती हो? मैं उसे घर वापस ले जाऊँगी।
जरूर, मैं आपके लिए एक बनाऊँगी, लेकिन कैनवास?
भाग्यश्री अपने सहेलियों को धेंकनाल में ब्रह्माणी नदी के पास ले गई।
मैं इन पत्थरों पर चित्र बना सकती हूँ। वे गोल, चिकने और एकदम सही नाप के हैं।
उत्तम विचार! यह तो कैनवास से भी बेहतर हो सकते हैं।
भाग्यश्री द्वारा चित्रित पत्थर बहुत लोकप्रिय हुए।
बहुत खूब, ये अद्भुत हैं! मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यह तुमने इसे चित्रित किया है।
धन्यवाद! मुझे इन पत्थरों को नया जीवन देने में आनंद आ रहा है।
महामारी के दरम्यान, भाग्यश्री ने खाली बोतलें, डिब्बे और बल्बों को इकट्ठा करना शुरू किया. कुछ दिनों बाद –
माँ, क्या आप इन बोतलों और बल्ब को पहचान सकती हो?
बहुत अच्छा! तुम केवल एक कलाकार ही नहीं हो, तुम पर्यावरण की मदद भी कर रही हो।
भाग्यश्री की तरह शायद हम सभी भी हमारे जीवन और हमारी आस-पास की दुनिया में कला के माध्यम से रंग भर सकते हैं।

राम लोटन कुशवाहा

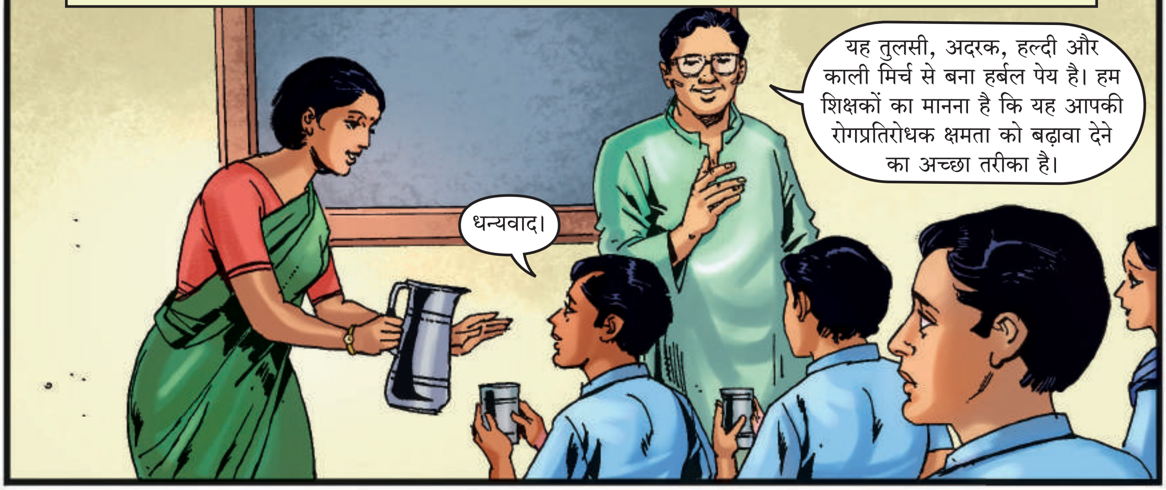

*पिता

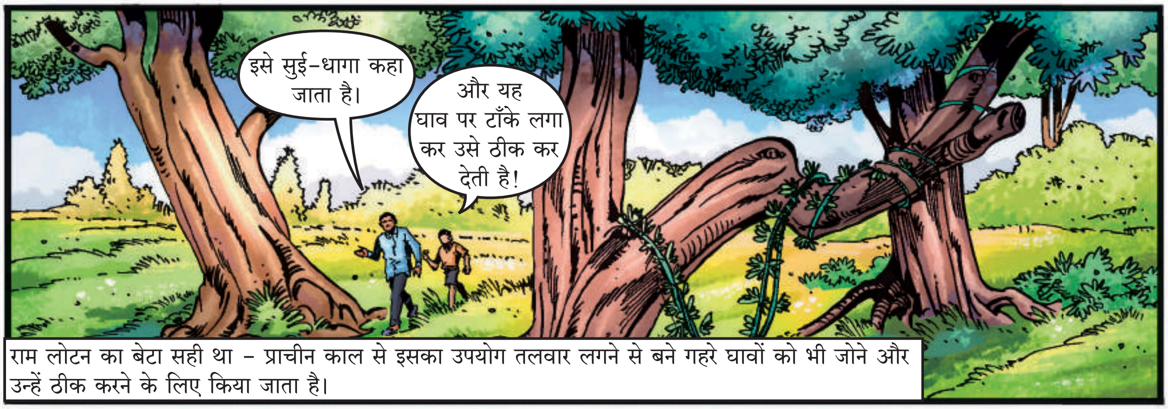
इसे सुई-धागा कहा जाता है।
और यह घाव पर टाँके लगा कर उसे ठीक कर देती है!
राम लोटन का बेटा सही था - प्राचीन काल से इसका उपयोग तलवार लगने से बने गहरे घावों को भी जोने और उन्हें ठीक करने के लिए किया जाता है।

आप जड़ी बूटियों के बारे में इतना सब कैसे जानते हो?
मैं यह सब तुम्हारे दादाजी और तुम्हारे परदादाजी से सीखा हूँ।
आप जो जानते हो वह सब कुछ मुझे जरूर सिखाना।
मैं तुम्हें और तुम्हारे छोटे भाई को सिखाऊँगा।

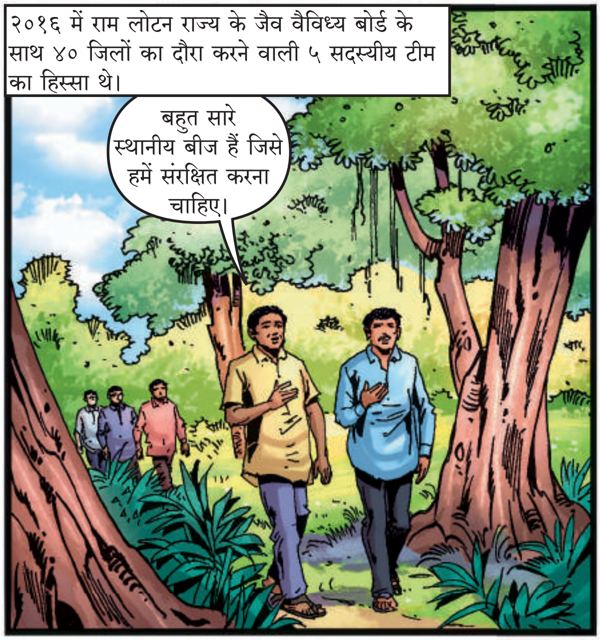
२०१६ में राम लोटन राज्य के जैव वैविध्य बोर्ड के साथ ४० जिलों का दौरा करने वाली ५ सदस्यीय टीम का हिस्सा थे।
बहुत सारे स्थानीय बीज हैं जिसे हमें संरक्षित करना चाहिए।

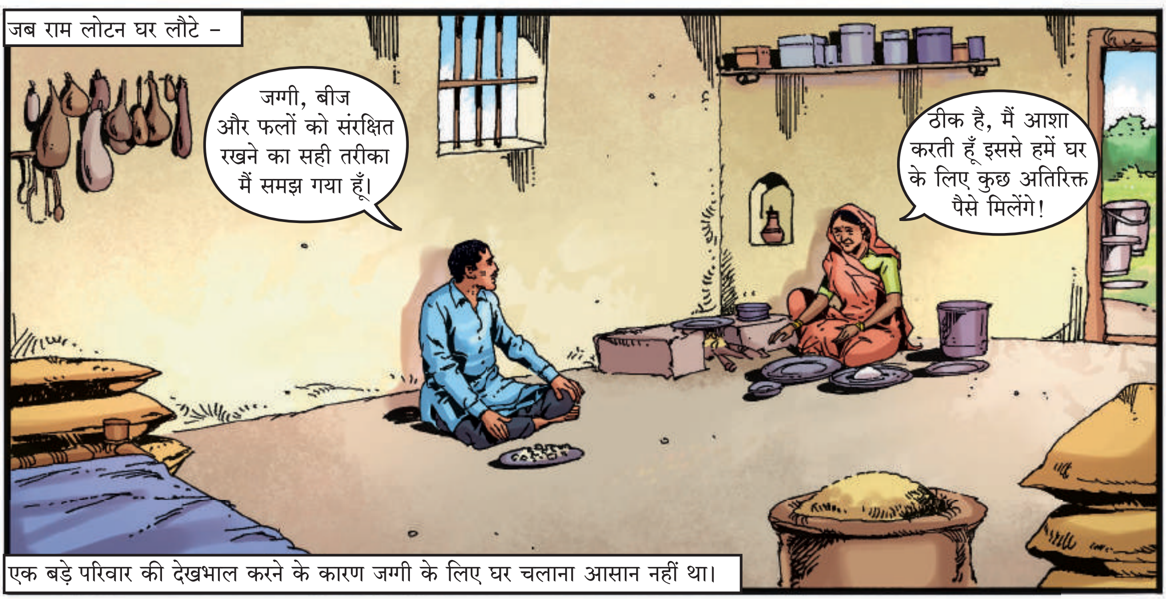
जब राम लोटन घर लौटे -
जग्गी, बीज और फलों को संरक्षित रखने का सही तरीका मैं समझ गया हूँ।
ठीक है, मैं आशा करती हूँ इससे हमें घर के लिए कुछ अतिरिक्त पैसे मिलेंगे!
एक बड़े परिवार की देखभाल करने के कारण जग्गी के लिए घर चलाना आसान नहीं था।

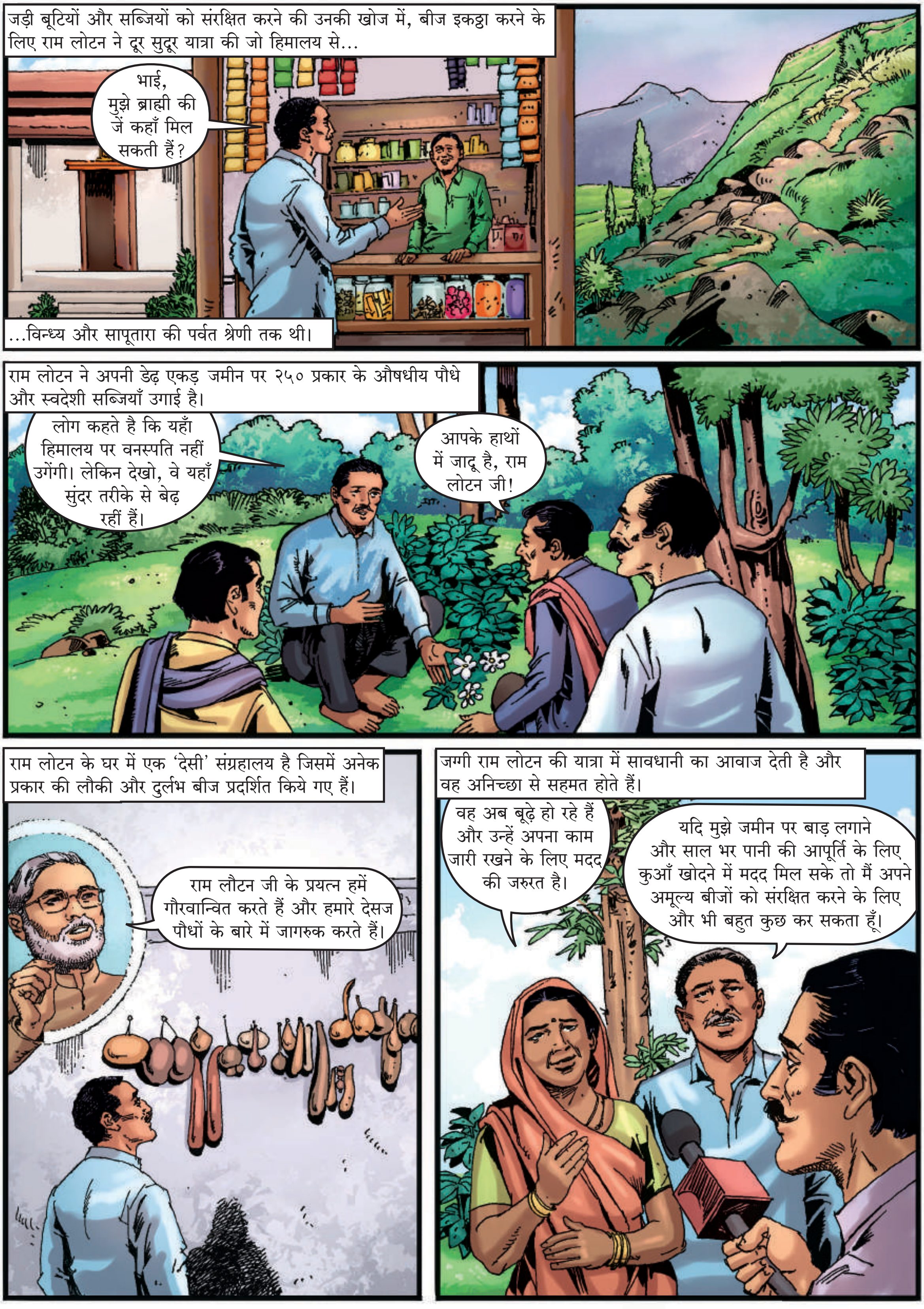
जड़ी बूटियों और सब्जियों को संरक्षित करने की उनकी खोज में, बीज इकट्ठा करने के लिए राम लोटन ने दूर सुदूर यात्रा की जो हिमालय से...
भाई, मुझे ब्राह्मी की जें कहाँ मिल सकती हैं?
...विन्ध्य और सापूतारा की पर्वत श्रेणी तक थी।
राम लोटन ने अपनी डेढ़ एकड़ जमीन पर २५० प्रकार के औषधीय पौधे और स्वदेशी सब्जियाँ उगाई है।
लोग कहते है कि यहाँ हिमालय पर वनस्पति नहीं उगेंगी। लेकिन देखो, वे यहाँ सुंदर तरीके से बेढ़ रहीं हैं।
आपके हाथों में जादू है, राम लोटन जी!
राम लोटन के घर में एक 'देसी' संग्रहालय है जिसमें अनेक प्रकार की लौकी और दुर्लभ बीज प्रदर्शित किये गए हैं।
राम लौटन जी के प्रयत्न हमें गौरवान्वित करते हैं और हमारे देसज पौधों के बारे में जागरुक करते हैं।
जग्गी राम लोटन की यात्रा में सावधानी का आवाज देती है और वह अनिच्छा से सहमत होते हैं।
वह अब बूढ़े हो रहे हैं और उन्हें अपना काम जारी रखने के लिए मदद की जरुरत है।
यदि मुझे जमीन पर बाड़ लगाने और साल भर पानी की आपूर्ति के लिए कुआँ खोदने में मदद मिल सके तो मैं अपने अमूल्य बीजों को संरक्षित करने के लिए और भी बहुत कुछ कर सकता हूँ।

तारिक अहमद पटलू

आज श्रेयस, चरण और पारुल क्यों अनुपस्थित हैं।
आशा करती हूँ यह फिर से कोविड नहीं होगा।

मैं भी यही आशा करता हूँ। अस्पतालों में बिस्तरों की कमी के कारण बहुत लोगों को परेशानी उठानी पड़ी। गाँवों में तो स्थिति और भी खराब थी।
सही है, लेकिन हमें उन्हें नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने आगे आकर लोगों की मदद की। कश्मीर के तारिक अहमद पटलू की तरह।

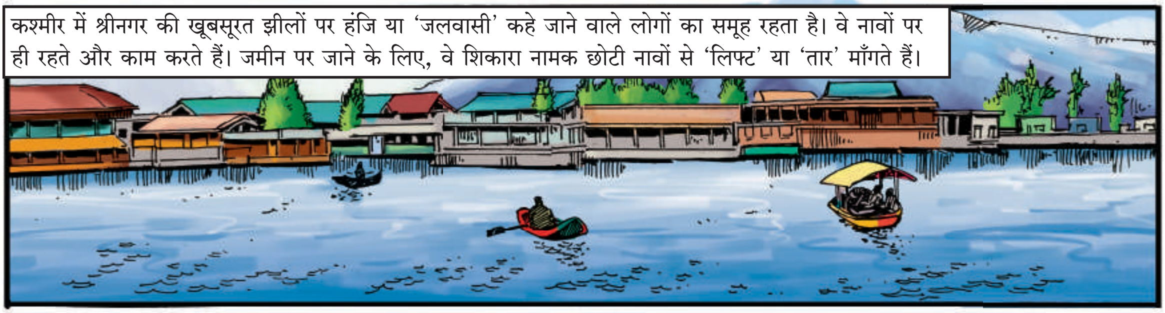
कश्मीर में श्रीनगर की खूबसूरत झीलों पर हंजि या 'जलवासी' कहे जाने वाले लोगों का समूह रहता है। वे नावों पर ही रहते और काम करते हैं। जमीन पर जाने के लिए, वे शिकारा नामक छोटी नावों से 'लिफ्ट' या 'तार' माँगते हैं।

२०२० में जब विश्व पर कोविड-१९ महामारी की मार पड़ी -
उह! मैं साँस नहीं ले सकता। मेहरबानी कर के मुझे अस्पताल ले चलो।
मैं आपको नहीं ले जा सकता। मैं संक्रमित होना नहीं चाहता।
तारिक अहमद दल झील पर एक हाउसबोट के मालिक थे। वह कोविड से संक्रमित हुए थे लेकिन कोई उन्हे अस्पताल ले जाने के लिए तैयार नहीं था।

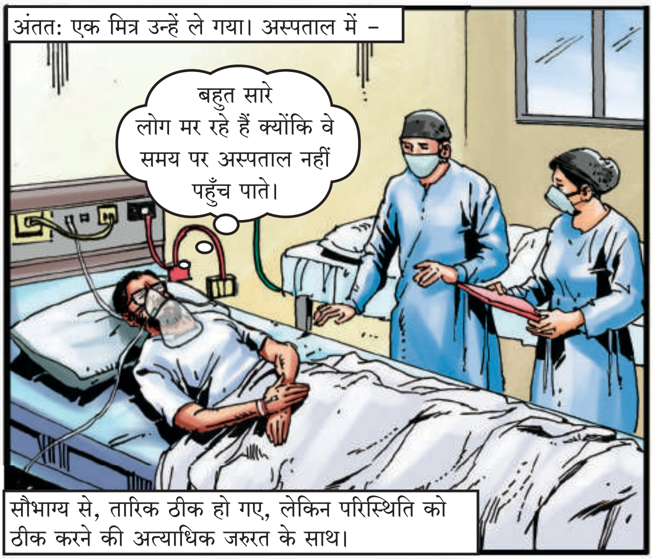
अंततः एक मित्र उन्हें ले गया। अस्पताल में -
बहुत सारे लोग मर रहे हैं क्योंकि वे समय पर अस्पताल नहीं पहुँच पाते।
सौभाग्य से, तारिक ठीक हो गए, लेकिन परिस्थिति को ठीक करने की अत्याधिक जरुरत के साथ।

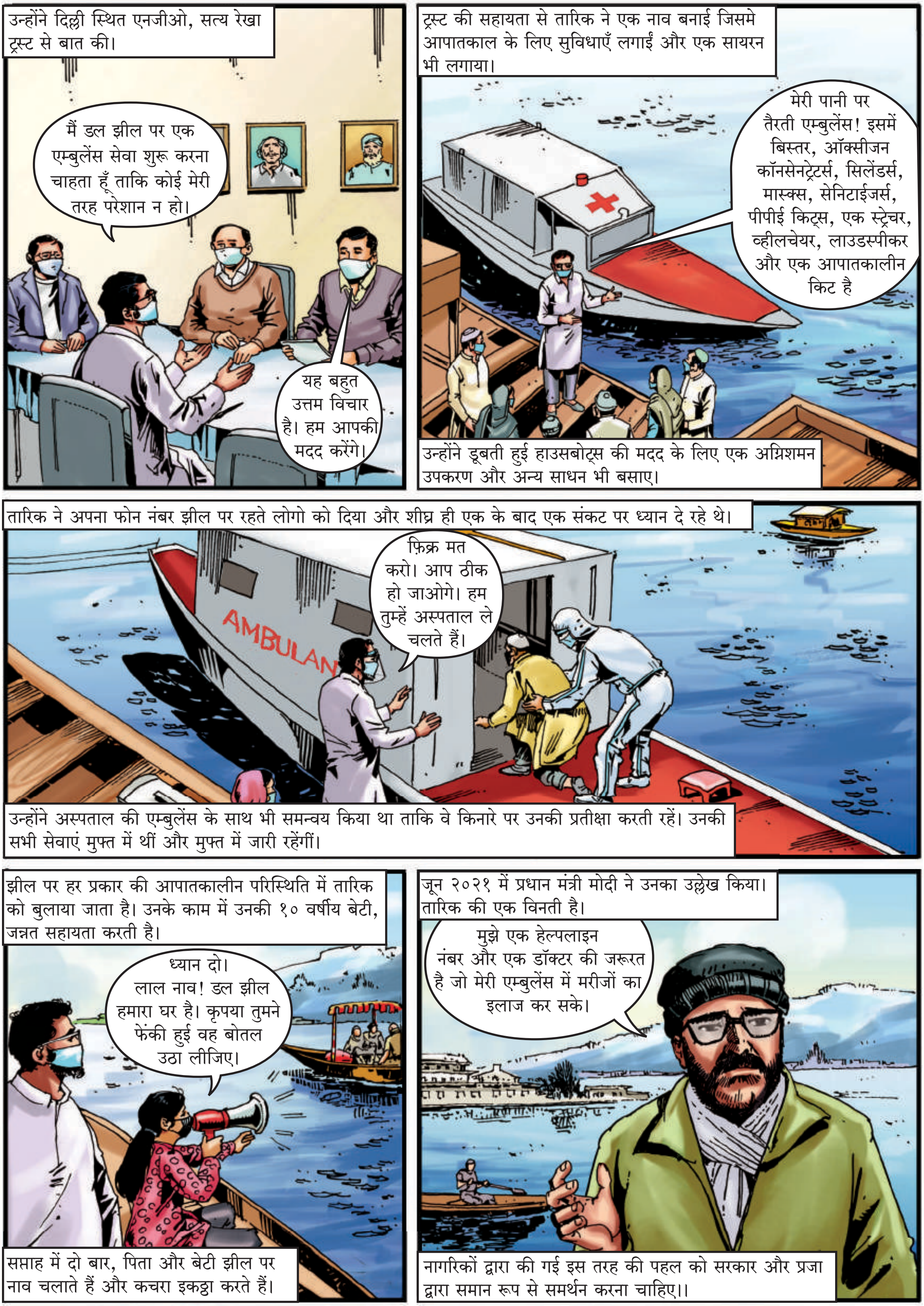
उन्होंने दिल्ली स्थित एनजीओ, सत्य रेखा ट्रस्ट से बात की।
मैं डल झील पर एक एम्बुलेंस सेवा शुरू करना चाहता हूँ ताकि कोई मेरी तरह परेशान न हो।
यह बहुत उत्तम विचार है। हम आपकी मदद करेंगे।
ट्रस्ट की सहायता से तारिक ने एक नाव बनाई जिसमे आपातकाल के लिए सुविधाएँ लगाईं और एक सायरन भी लगाया।
मेरी पानी पर तैरती एम्बुलेंस! इसमें बिस्तर, ऑक्सीजन कॉनसेनट्रेटर्स, सिलेंडर्स, मास्क्स, सेनिटाईजर्स, पीपीई किट्स, एक स्ट्रेचर, व्हीलचेयर, लाउडस्पीकर और एक आपातकालीन किट है
उन्होंने डूबती हुई हाउसबोट्स की मदद के लिए एक अग्निशमन उपकरण और अन्य साधन भी बसाए।
तारिक ने अपना फोन नंबर झील पर रहते लोगो को दिया और शीघ्र ही एक के बाद एक संकट पर ध्यान दे रहे थे।
AMBULAN
फ़िक्र मत करो। आप ठीक हो जाओगे। हम तुम्हें अस्पताल ले चलते हैं।
उन्होंने अस्पताल की एम्बुलेंस के साथ भी समन्वय किया था ताकि वे किनारे पर उनकी प्रतीक्षा करती रहें। उनकी सभी सेवाएं मुफ्त में थीं और मुफ्त में जारी रहेंगीं।
झील पर हर प्रकार की आपातकालीन परिस्थिति में तारिक को बुलाया जाता है। उनके काम में उनकी १० वर्षीय बेटी, जन्नत सहायता करती है।
ध्यान दो। लाल नाव! डल झील हमारा घर है। कृपया तुमने फेंकी हुई वह बोतल उठा लीजिए।
सप्ताह में दो बार, पिता और बेटी झील पर नाव चलाते हैं और कचरा इकठ्ठा करते हैं।
जून २०२१ में प्रधान मंत्री मोदी ने उनका उल्लेख किया। तारिक की एक विनती है।
मुझे एक हेल्पलाइन नंबर और एक डॉक्टर की जरूरत है जो मेरी एम्बुलेंस में मरीजों का इलाज कर सके।
नागरिकों द्वारा की गई इस तरह की पहल को सरकार और प्रजा द्वारा समान रूप से समर्थन करना चाहिए।।

संजय कच्छप

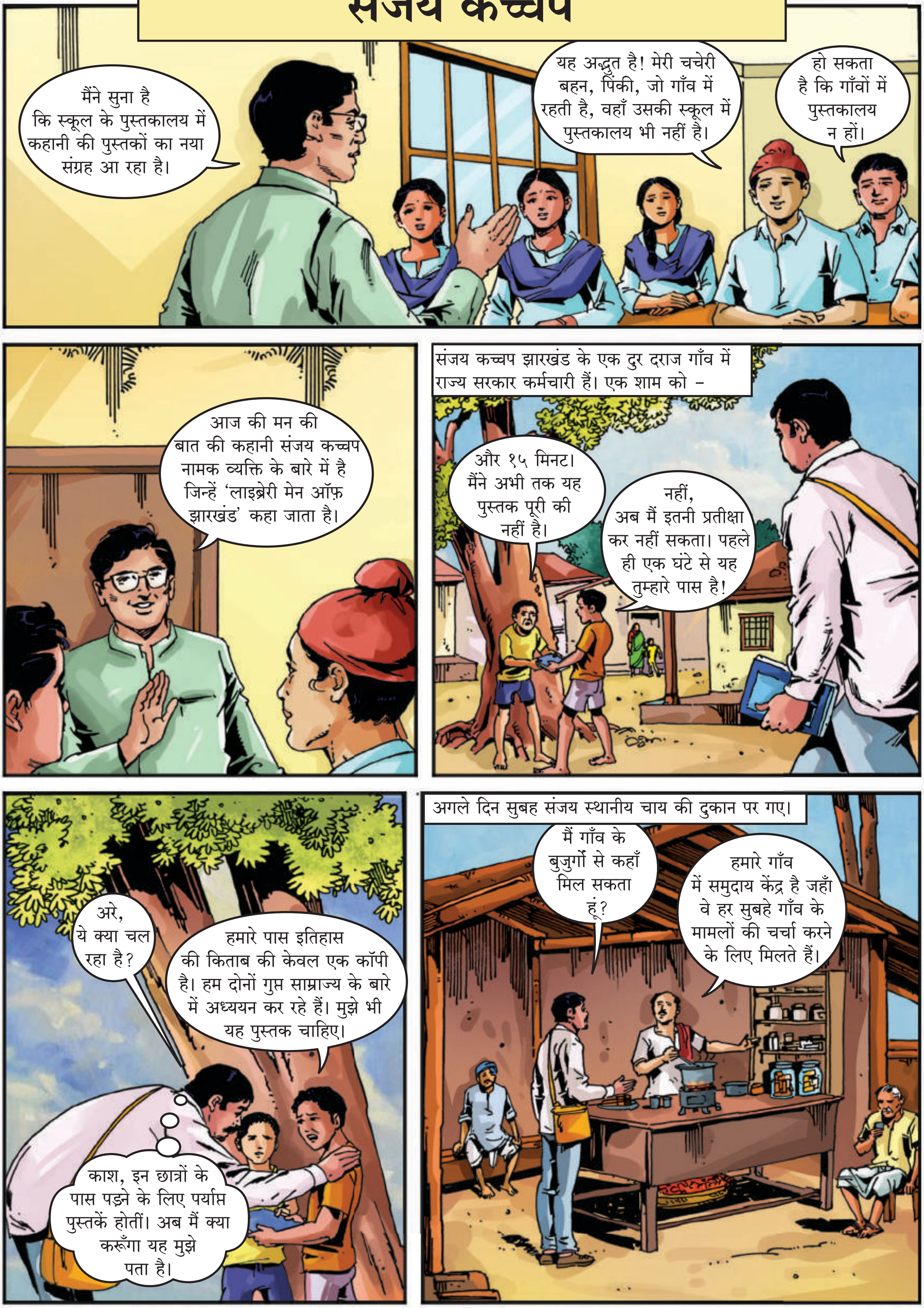

मैंने सुना है कि स्कूल के पुस्तकालय में कहानी की पुस्तकों का नया संग्रह आ रहा है।
यह अद्भुत है! मेरी चचेरी बहन, पिंकी, जो गाँव में रहती है, वहाँ उसकी स्कूल में पुस्तकालय भी नहीं है।
हो सकता है कि गाँवों में पुस्तकालय न हों।
आज की मन की बात की कहानी संजय कच्छप नामक व्यक्ति के बारे में है जिन्हें 'लाइब्रेरी मेन ऑफ़ झारखंड' कहा जाता है।
संजय कच्छप झारखंड के एक दुर दराज गाँव में राज्य सरकार कर्मचारी हैं। एक शाम को –
और १५ मिनट। मैंने अभी तक यह पुस्तक पूरी की नहीं है।
नहीं, अब मैं इतनी प्रतीक्षा कर नहीं सकता। पहले ही एक घंटे से यह तुम्हारे पास है!
अरे, ये क्या चल रहा है?
हमारे पास इतिहास की किताब की केवल एक कॉपी है। हम दोनों गुप्त साम्राज्य के बारे में अध्ययन कर रहे हैं। मुझे भी यह पुस्तक चाहिए।
काश, इन छात्रों के पास पढ़ने के लिए पर्याप्त पुस्तकें होतीं। अब मैं क्या करूँगा यह मुझे पता है।
अगले दिन सुबह संजय स्थानीय चाय की दुकान पर गए।
मैं गाँव के बुजुर्गो से कहाँ मिल सकता हूं?
हमारे गाँव में समुदाय केंद्र है जहाँ वे हर सुबहे गाँव के मामलों की चर्चा करने के लिए मिलते हैं।

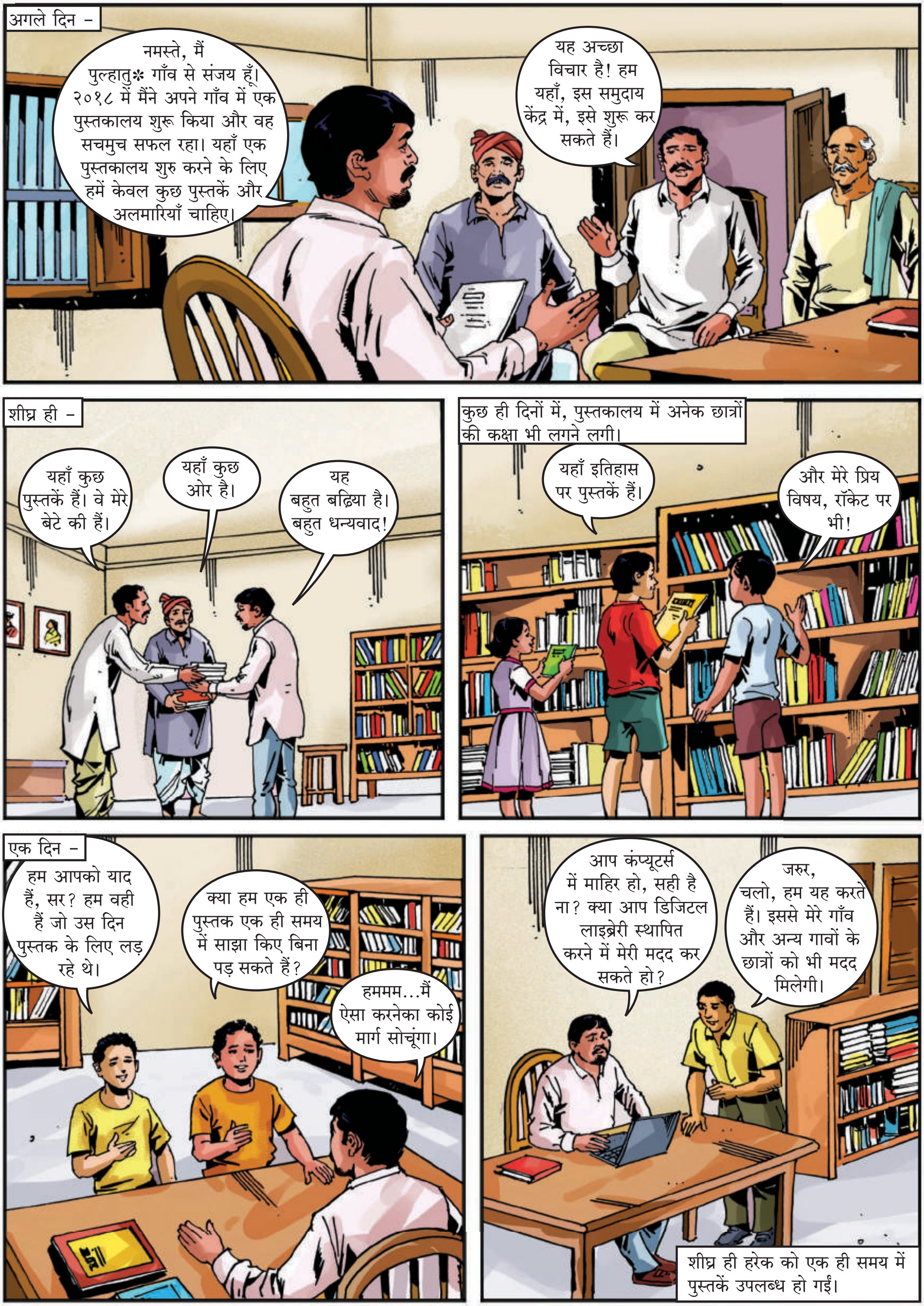

*झारखंड के पश्चिम सिंघभुम जिले में एक गाँव

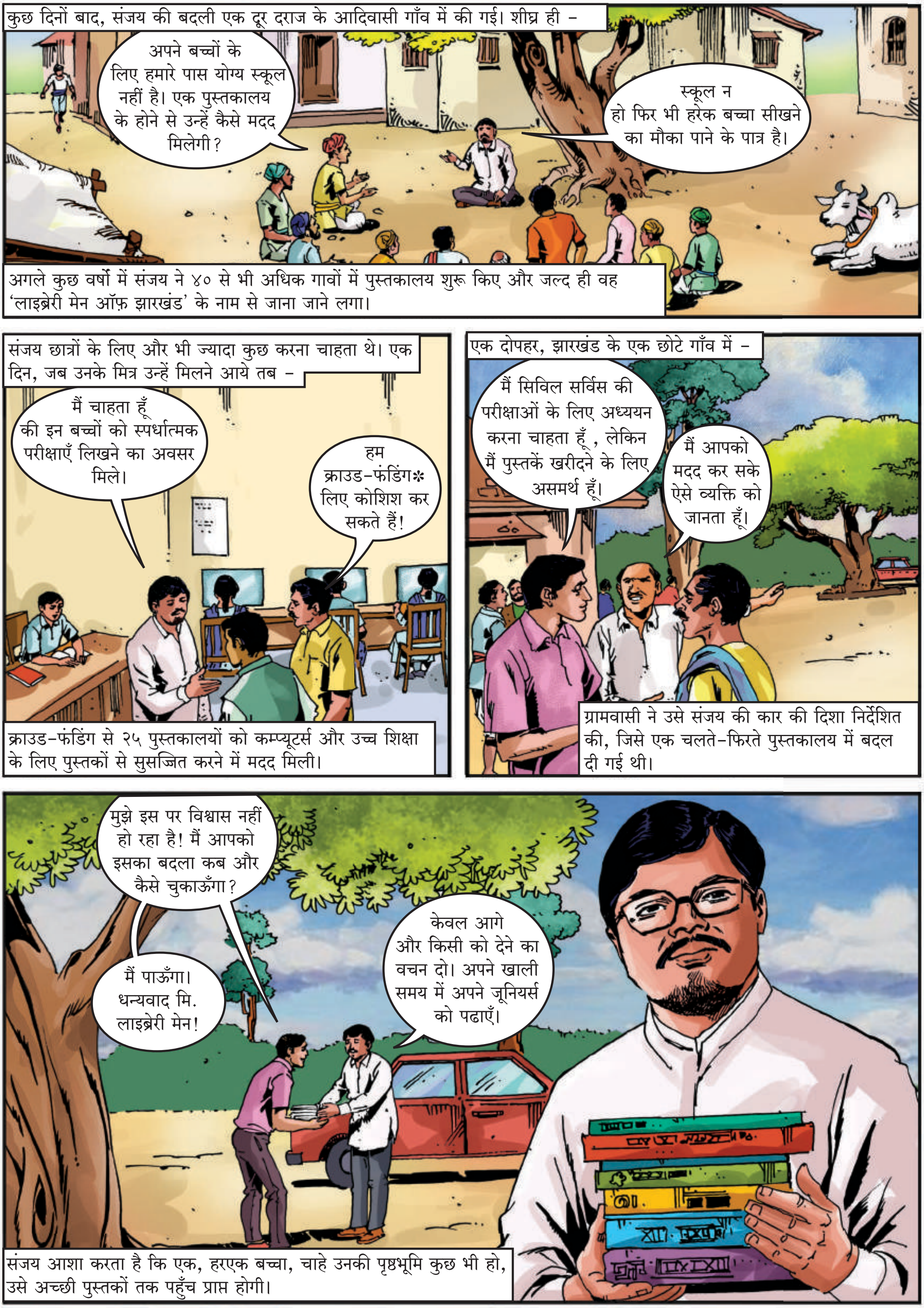

*इन्टरनेट की सहायता से बड़ी संख्या में लोगों से पैसे जुटाना।

हरिश्चंद्र सिंह

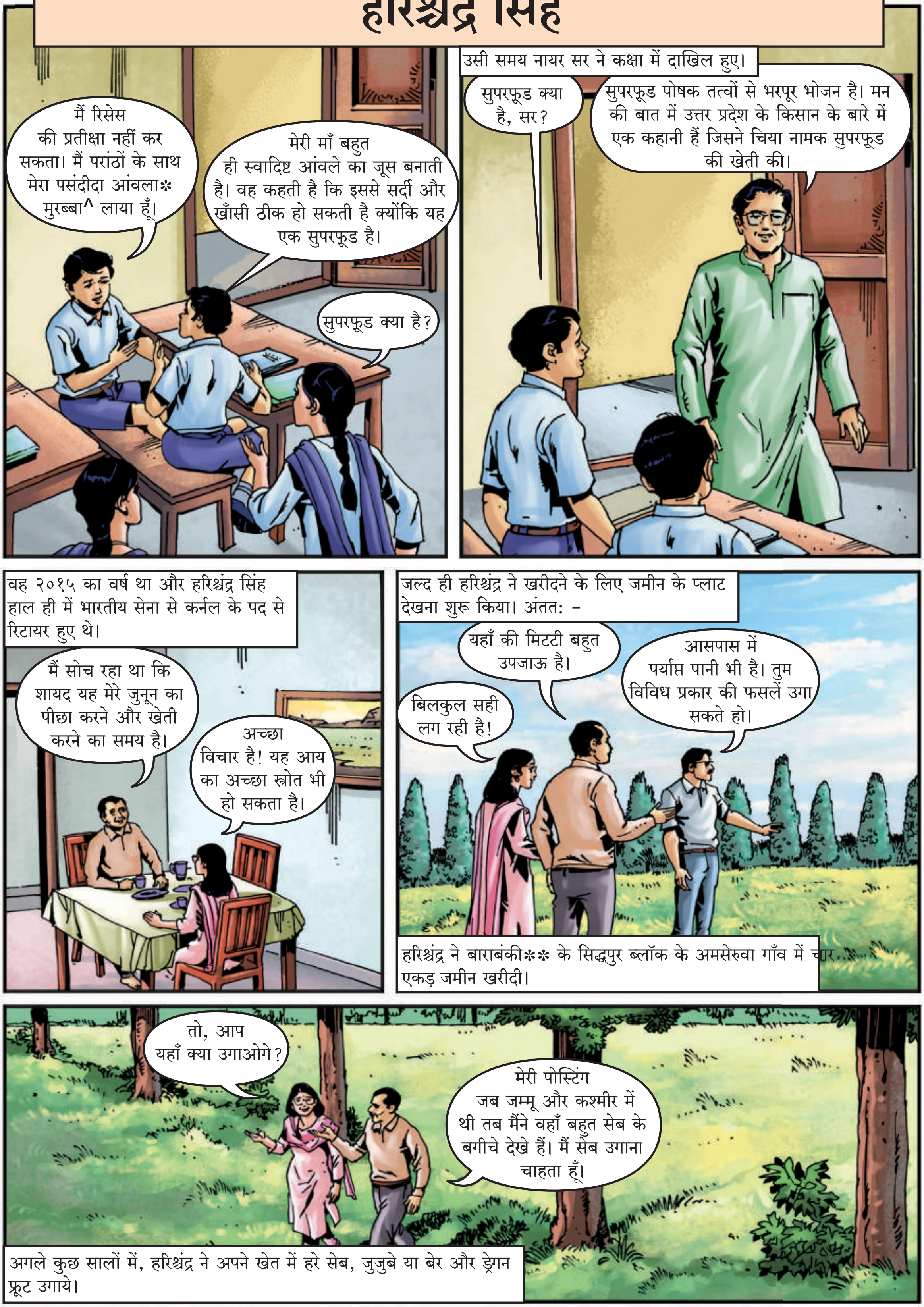

*भारतीय करौंदा
^चीनी की चासनी में परिरक्षित करौंदा

**उत्तर प्रदेश में एक जिला

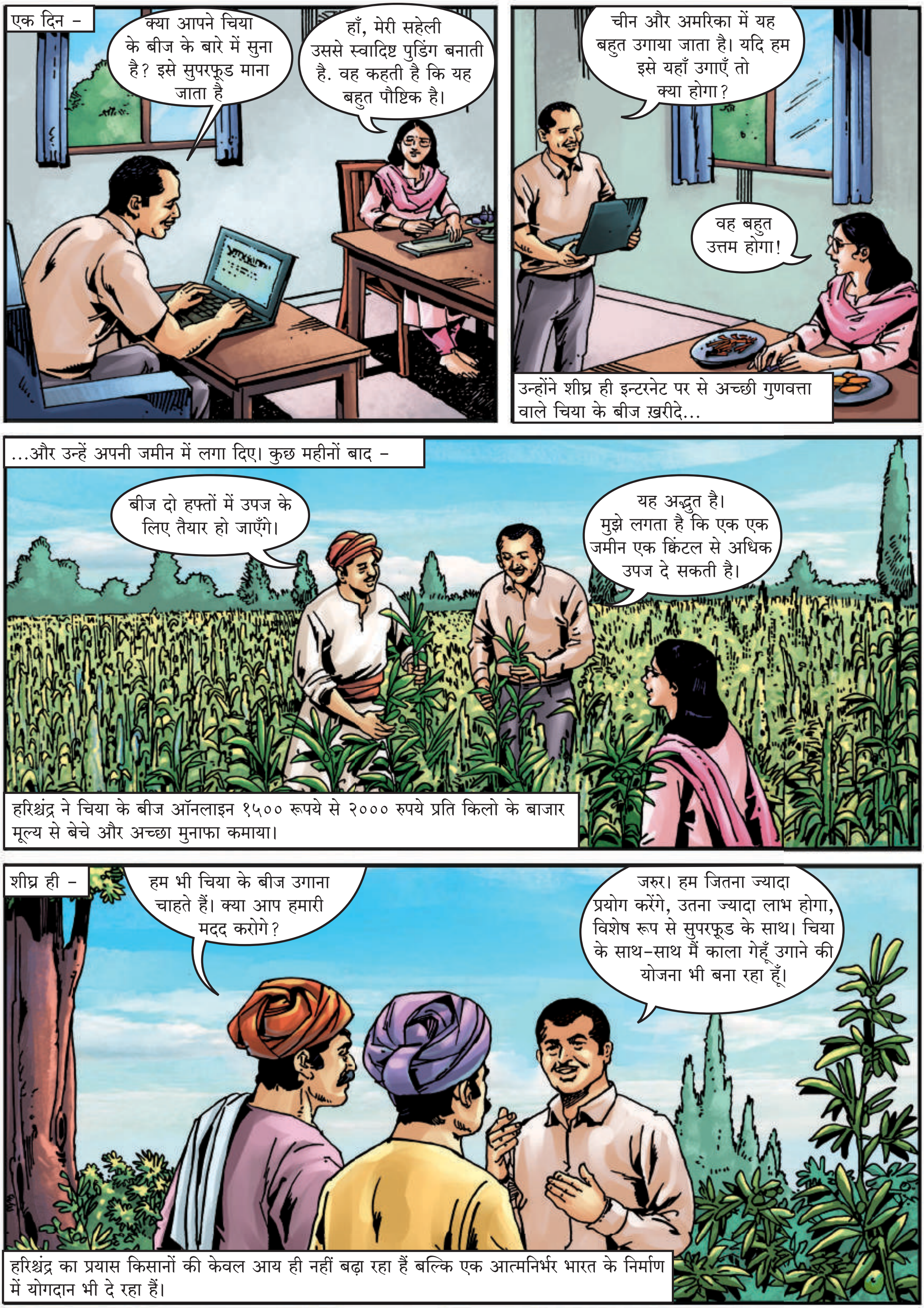

*एक क्विंटल १०० किलोग्राम के बराबर है

सच्चिदानंद भारती

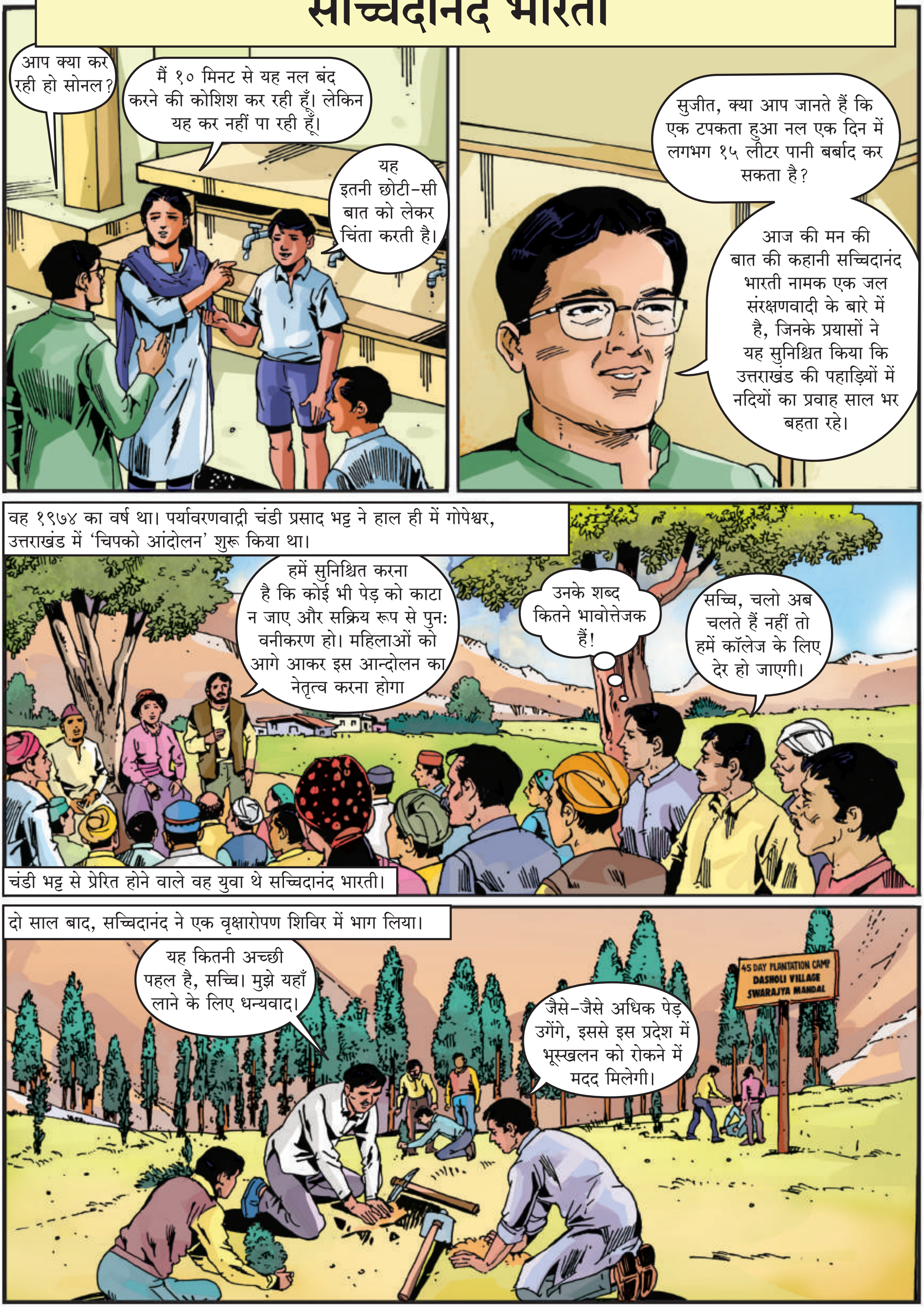

*एक आंदोलन जिसमे ग्रामवासी पेड़ों को संरक्षित करने के प्रयास में उनसे चिपक जाते थे।

^उत्तराखंड के चमोली जिले में एक गाँव।

*उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले में स्थित एक गाँव।
^उत्तराखंड में २५ किमी तक फैली हुई एक पर्वत श्रृंखला।

**पानी से भरे गड्ढ
^^पानी बचाओ आंदोलन

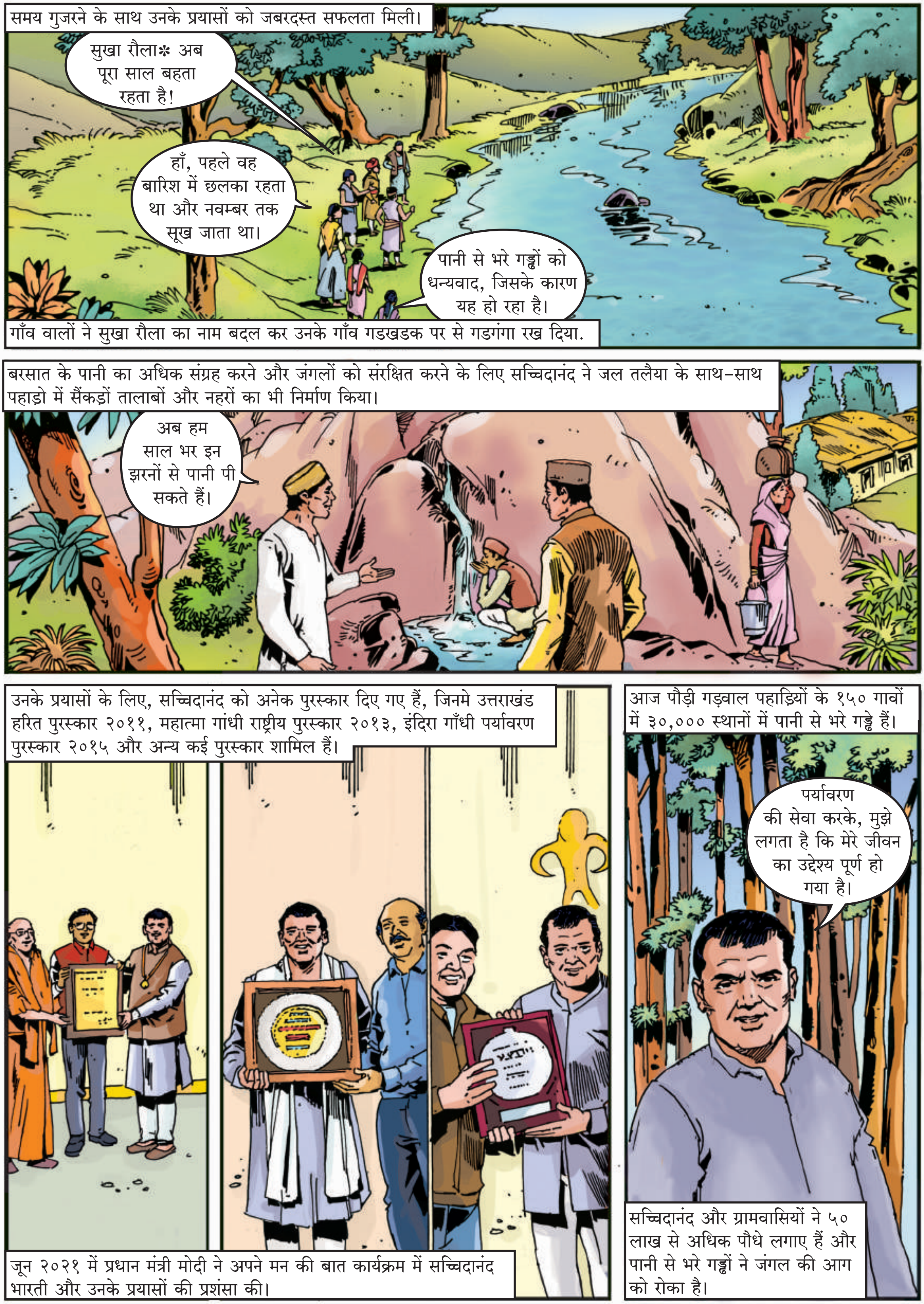
समय गुजरने के साथ उनके प्रयासों को जबरदस्त सफलता मिली।
सुखा रौला* अब पूरा साल बहता रहता है!
हाँ, पहले वह बारिश में छलका रहता था और नवम्बर तक सूख जाता था।
पानी से भरे गड्ढों को धन्यवाद, जिसके कारण यह हो रहा है।
गाँव वालों ने सुखा रौला का नाम बदल कर उनके गाँव गडखडक पर से गडगंगा रख दिया.
बरसात के पानी का अधिक संग्रह करने और जंगलों को संरक्षित करने के लिए सच्चिदानंद ने जल तलैया के साथ-साथ पहाड़ो में सैंकड़ों तालाबों और नहरों का भी निर्माण किया।
अब हम साल भर इन झरनों से पानी पी सकते हैं।
उनके प्रयासों के लिए, सच्चिदानंद को अनेक पुरस्कार दिए गए हैं, जिनमे उत्तराखंड हरित पुरस्कार २०११, महात्मा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार २०१३, इंदिरा गाँधी पर्यावरण पुरस्कार २०१५ और अन्य कई पुरस्कार शामिल हैं।
जून २०२१ में प्रधान मंत्री मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में सच्चिदानंद भारती और उनके प्रयासों की प्रशंसा की।
आज पौड़ी गड़वाल पहाड़ियों के १५० गावों में ३०,००० स्थानों में पानी से भरे गड्ढे हैं।
पर्यावरण की सेवा करके, मुझे लगता है कि मेरे जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो गया है।
सच्चिदानंद और ग्रामवासियों ने ५० लाख से अधिक पौधे लगाए हैं और पानी से भरे गड्ढों ने जंगल की आग को रोका है।

*सुखा खड्डा

सीकरी टीस्सो

*उड़िया में, मुझे क्षमा करना

**करबी भाषा में अभिवादन

^असम में सब से बे जिलों में से एक

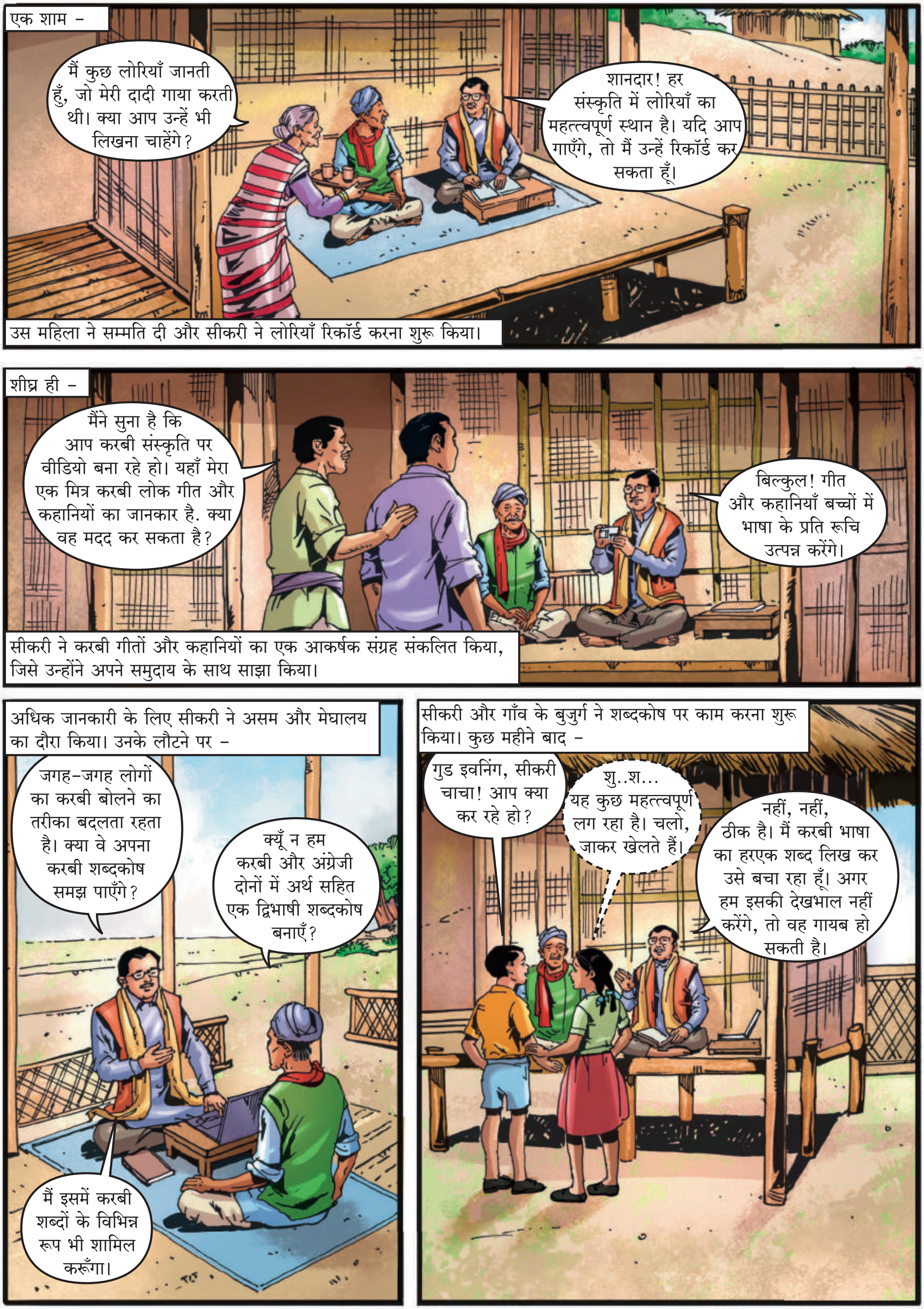

एक शाम –
मैं कुछ लोरियाँ जानती हुँ, जो मेरी दादी गाया करती थी। क्या आप उन्हें भी लिखना चाहेंगे?
शानदार! हर संस्कृति में लोरियाँ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि आप गाएँगे, तो मैं उन्हें रिकॉर्ड कर सकता हूँ।
उस महिला ने सम्मति दी और सीकरी ने लोरियाँ रिकॉर्ड करना शुरू किया।
शीघ्र ही –
मैंने सुना है कि आप करबी संस्कृति पर वीडियो बना रहे हो। यहाँ मेरा एक मित्र करबी लोक गीत और कहानियों का जानकार है. क्या वह मदद कर सकता है?
बिल्कुल! गीत और कहानियाँ बच्चों में भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न करेंगे।
सीकरी ने करबी गीतों और कहानियों का एक आकर्षक संग्रह संकलित किया, जिसे उन्होंने अपने समुदाय के साथ साझा किया।
अधिक जानकारी के लिए सीकरी ने असम और मेघालय का दौरा किया। उनके लौटने पर –
जगह-जगह लोगों का करबी बोलने का तरीका बदलता रहता है। क्या वे अपना करबी शब्दकोष समझ पाएँगे?
क्यूँ न हम करबी और अंग्रेजी दोनों में अर्थ सहित एक द्विभाषी शब्दकोष बनाएँ?
मैं इसमें करबी शब्दों के विभिन्न रूप भी शामिल करूँगा।
सीकरी और गाँव के बुजुर्ग ने शब्दकोष पर काम करना शुरू किया। कुछ महीने बाद –
गुड इवनिंग, सीकरी चाचा! आप क्या कर रहे हो?
शु..श... यह कुछ महत्त्वपूर्ण लग रहा है। चलो, जाकर खेलते हैं।
नहीं, नहीं, ठीक है। मैं करबी भाषा का हरएक शब्द लिख कर उसे बचा रहा हूँ। अगर हम इसकी देखभाल नहीं करेंगे, तो वह गायब हो सकती है।

हम भी मदद करना चाहते हैं। हम क्या कर सकते हैं?
आप करबी बोलना सीख सकते हैं और दूसरों को भी सिखा सकते हैं। हम सब साथ मिल कर हमारी भाषा को जीवित रखेंगे।
अंतत; वह दिन जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था।

समय बीतने के साथ, समस्त राज्य में सीकरी के काम को पहचान मिली। एक दिन उन्हें पास की स्कूल में आमंत्रित किया गया।
करबी में आपकी रूचि पैदा करने के लिए सीकरी सर यहाँ आए हैं।
पहले मैं आप सबको मेरी पुस्तक क्लिम्सो* से एक बालगीत सिखाऊँगा। मेरे पीछे दोहराएँ – क्लिम्सो, क्लिम्सो, क्लिम्सो करबी बालगीत आपको चमकाते हैं!'
बच्चे ख़ुशी से करबी बालगीत सीख गए।

२०२१ में सीकरी अपनी नौकरी से सेवानिवृत्त हुए। उस रात –
अब मैं हमारी देशी भाषा का संरक्षण करने का अपना सपना पूरा करने के लिए अधिक समय दे सकता हूँ। यह मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है।

कुछ दिनों बाद –
असम की स्वदेशीय जनजाति साहित्य सभा ने आपके लिए एक विशेष निमंत्रण भेजा है।
हम चाहते हैं कि आप एक बहुभाषीय शब्दकोष परियोजना के मुख्य संपादक बने। इसमें करबी भी शामिल है।
भाषाएँ अनमोल हैं। मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से उनका संरक्षण करूँगा।
प्रधान मंत्री मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम मन की बात में अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए सीकरी टीस्सो की प्रशंसा की।

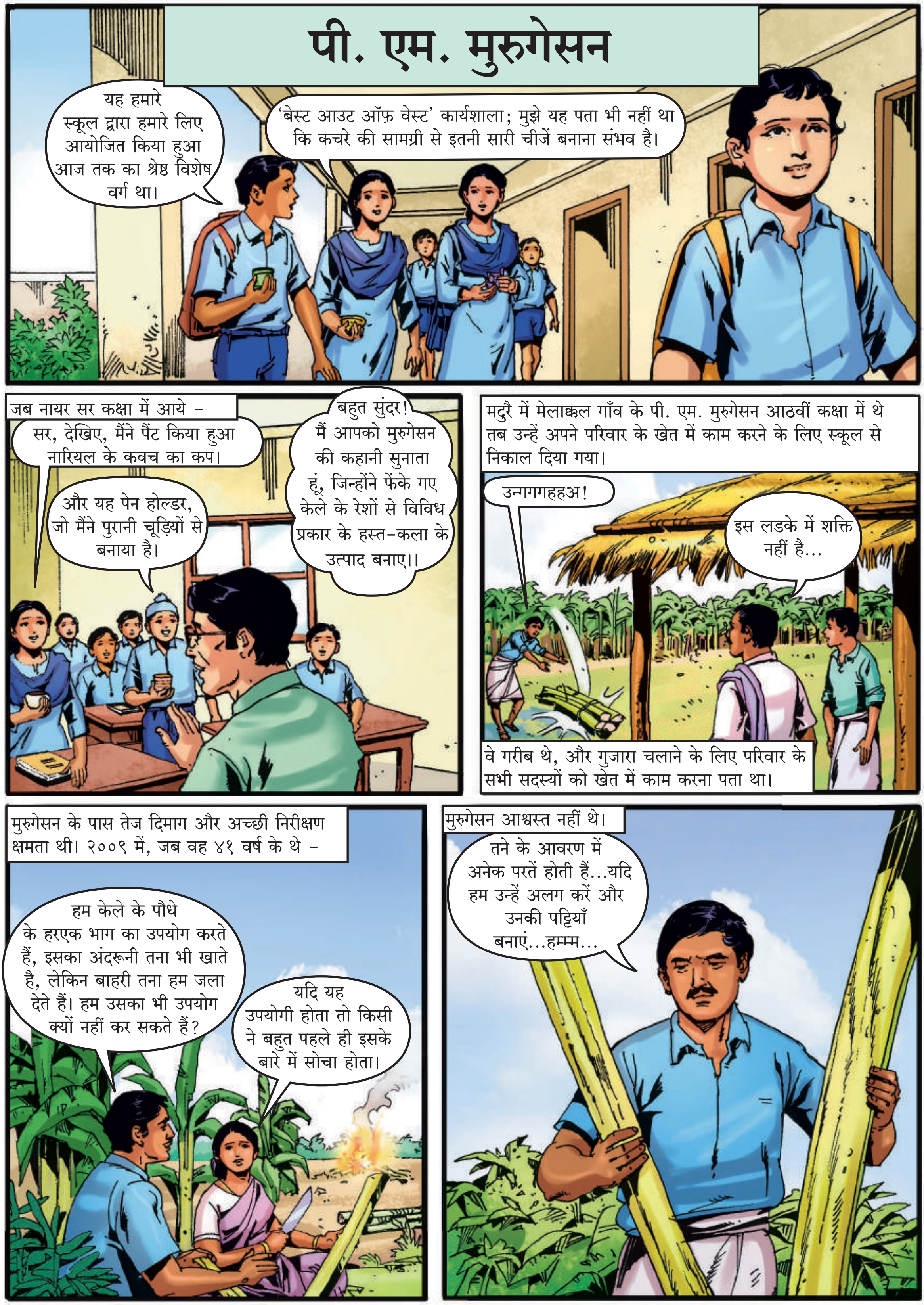
पी. एम. मुरुगेसन
यह हमारे स्कूल द्वारा हमारे लिए आयोजित किया हुआ आज तक का श्रेष्ठ विशेष वर्ग था।
'बेस्ट आउट ऑफ़ वेस्ट' कार्यशाला; मुझे यह पता भी नहीं था कि कचरे की सामग्री से इतनी सारी चीजें बनाना संभव है।
जब नायर सर कक्षा में आये –
सर, देखिए, मैंने पैंट किया हुआ नारियल के कवच का कप।
और यह पेन होल्डर, जो मैंने पुरानी चूड़ियों से बनाया है।
बहुत सुंदर! मैं आपको मुरुगेसन की कहानी सुनाता हूं, जिन्होंने फेंके गए केले के रेशों से विविध प्रकार के हस्त–कला के उत्पाद बनाए।।
मदुरै में मेलाक्कल गाँव के पी. एम. मुरुगेसन आठवीं कक्षा में थे तब उन्हें अपने परिवार के खेत में काम करने के लिए स्कूल से निकाल दिया गया।
उन्नगगहहअ!
इस लडके में शक्ति नहीं है...
वे गरीब थे, और गुजारा चलाने के लिए परिवार के सभी सदस्यों को खेत में काम करना पता था।
मुरुगेसन के पास तेज दिमाग और अच्छी निरीक्षण क्षमता थी। २००९ में, जब वह ४१ वर्ष के थे –
हम केले के पौधे के हरएक भाग का उपयोग करते हैं, इसका अंदरूनी तना भी खाते है, लेकिन बाहरी तना हम जला देते हैं। हम उसका भी उपयोग क्यों नहीं कर सकते हैं?
यदि यह उपयोगी होता तो किसी ने बहुत पहले ही इसके बारे में सोचा होता।
मुरुगेसन आश्वस्त नहीं थे।
तने के आवरण में अनेक परतें होती हैं...यदि हम उन्हें अलग करें और उनकी पट्टियाँ बनाएं...हम्म्म...

एक दिन–
आप यह क्या कर रहे हो?
यह एक स्पिनिंग मशीन है जो नारियल के छिलकों से रस्सी बनाने में मदद करती है। मैं केले की पट्टियों से रस्सी बनाने का प्रयास कर रहा हूँ।
वह प्रयास असफल रहा लेकिन मुरुगेसन अब संशोधन के मार्ग पर था। बहुत असफल और सफल प्रयासों के बाद –
मैंने यह कर दिया! इस नई मशीन से हम केले के तने से रस्सी बुन सकते हैं।
मुरुगेसन ने नारियल मशीन को केले के पौधे के अनुरूप बनाया था।
साईकिल के पहिये और चरखी के साथ, मुरुगेसन केले के रेशों को बुनकर रस्सी बना सकता था।
केले से रस्सी! यह टूट जाएगी. इसे कौन खरीदेगा?
उन्हें और मजबूत बनाने के लिए यदि हम उन्हें चोटी की तरह एक साथ गुंथें तो क्या होगा?
पति और पत्नी ने साथ मिलकर रेशों की चोटी गूंथने ओर मजबूत रस्सी बनाने का काम किया।
लेकिन यह फिर भी बाजार में उपलब्ध अन्य रस्सियों जितना मजबूत नहीं था, इसलिए कोई भी इसे लेना नहीं चाहता था।
मैं हार नहीं मानूँगा। चलो, हम इससे कुछ बनाने का प्रयास करें।
थैले, टोकरियाँ, फ्लोर मेट्स...पति-पत्नी ने जाना कि वे अपनी रस्सी से कई चीजें बना सकते है।

शीघ्र ही मुरुगेसन ने एम. एस. रोप प्रोडक्शन सेंटर नामक एक कंपनी स्थापित की। उनकी दो व्यक्तियों की छोटी-सी कंपनी बढ़कर दस की हो गई। लेकिन रस्सी बनाने की प्रक्रिया में बहुत समय लगता था।
हम सब पूरा दिन काम करते हैं लेकिन मुश्किल से कुछ उत्पादन कर पाते है। हाथ से मशीन को चलाने के बजाय यदि मैं उसमे एक मोटर लगा दूँ तो क्या होगा?
प्रक्रिया बहुत तेज हो गई और मुरुगेसन ने अपने विचार को पेटेंट किया। २०१६ में उन्होंने एक नई मशीन बनायी जो एक के बजाय रस्सी के छह रोल बना सकती थी।
अब हम २५,००० मीटर रस्सी बना रहे हैं! पहले हम केवल २५०० मीटर बना सकते थे!
हमने बहुत सारी महिलाओं को नौकरी दी है। इससे मुझे बहुत ख़ुशी मिलती है।
शीघ्र ही ३५० से भी अधिक महिलाएँ इस प्रक्रिया में सम्मिलित हो गईं।
मुरुगेसन ने एक स्वचालित मशीन डिज़ाइन की, जो रस्सी बना सकती थी और उसे लपेट भी सकती थी। शीघ्र ही वह अपने उत्पादों का निर्यात भी करने लगा।
ग्राहक मुझे पूछ रहा है कि मैं अपने उत्पाद किस कीमत पर बेचना चाहता हूँ! एक किसान को उसकी कीमत कोई नहीं पूछता, यह तो अद्भुत है!
मुरुगेसन के उत्पाद बायो बायोडिग्रेडेबल यानि जैव निम्नीकरणीय और प्लास्टिक के किफायती विकल्प हैं। उन्होंने अपने कृषि-नवाचार के लिए कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वह अब लोगों को इस प्रकिया की तालीम देते हैं और सरकार के लिए अपने मशीनों का उत्पादन भी करते हैं।
२०२१ में प्रधान मंत्री मोदी ने भी मन की बात में अवशिष्ट को सम्पत्ति में बदलने के लिए और किसानों को अतिरिक्त आय का मार्ग उपलब्ध कराने के लिए उनकी प्रशंसा की।

मन की बात

खण्ड ३

मन की बात का तीसरा खण्ड जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले उन नागरिकों पर प्रकाश डालता है जो अपने आसपास के लोगों का जीवन बेहतर बनाने के लिए कुछ कर रहे हैं।

जब कोविड-१९ महामारी आई और श्रीनगर की झीलों पर रहने वाले लोग बीमार पड़ने लगे थे तब तारिक अहमद पटलू ने उन्हें किनारे से अस्पताल तक पहुँचाने के लिए एक नाव में एम्बुलेंस बनाई।

मोन शुगु १००० साल पुरानी कागज़ बनाने की जनजातीय कला है जो लुप्त हो रही थी। अरुणाचल प्रदेश के मलिंग गोम्बु इसको पुनर्जीवित करने के लिए नेत्तृत्व लेने वाले और दर्जनों लोगों को रोजगार देने वाले व्यक्ति थे।

आपने कभी समुद्र की सतह से १४,००० फिट ऊँचे तरबूजों को उगते हुए देखा है? उर्गैन फुन्त्सोग, लडख के एक नवोन्वेषी किसान ने वह और उससे भी अधिक कर दिखाया है।

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम से चुनी हुई ये सब सामान्य लोगों द्वारा किये गए असामान्य कार्यों की कहानियाँ हैं।

₹90

ISBN 978-81-19242-86-3

9 788119 242863